ॐ

स्वामी शरण कृत

वैदिक शब्दकोश

(लघु संस्करण)

वैदिक शब्दों - पदों का व्याकरणसम्मत भाषार्थ,

संज्ञा, विशेषण, क्रिया शब्दों का धातुज अर्थ

प्रकाशक :

पालीवाल प्रकाशन

मूल्य : दो सौ रुपये मात्र

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ॐ खम् ब्रह्म ॥

जो आदित्य पुरुष (ईश्वर) है, वह मैं हूँ। ओम् सर्वव्यापक ब्रह्म है।

पुस्तक	:	**वैदिक शब्दकोश (लघु संस्करण)**
लेखक	:	स्वामी शरण
सर्वाधिकार	:	लेखकाधीन
संस्करण	:	प्रथम, 2016 ई.
		(प्रथम, मकर संक्रान्ति, 2072 वि., 5117 युगाब्द)
मूल्य	:	रु. 200/–
प्रकाशक	:	पालीवाल प्रकाशन
मुद्रक	:	पालीवाल प्रकाशन

पालीवाल भवन, 117/एच-1/02, पाण्डु नगर,

जे. के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005

वेबसाइट - vedayan.simplesite.com

मो. **9839105629, 8687849004, 7985402016**

VEDIK SHABDKOSH
BY SWAMI SHARAN

मूल्य : दो सौ रुपये मात्र

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

गायत्री साहित्य केन्द्र

पालीवाल भवन, 117/एच-1/02, पाण्डु नगर,

जे. के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005

ॐ

वैदिक शब्दकोश

विषय सूची

निवेदन	05
अ,	15
आ,	25
इ,	28
ई,	30
ऋ,	30
उ,	31
ऊ,	33
ए,	33
ऐ,	34
ओ,	35
क,	35
क्ष,	38
ख,	39
ग,	39
घ,	40
च,	40
छ,	42
ज,	42

ण	45
त,	45
त्र,	49
द,	49
द्य,	54
ध,	55
न,	56
प,	58
ब,	67
भ,	69
म,	71
य,	76
र,	79
ल,	82
व,	82
श,	93
श्र,	95
ष,	96
स,	96
ह,	105

ॐ

निवेदन

वैदिक साहित्य तथा देववाणी वैदिक संस्कृत भाषा में रुचि रखने वाले विद्याप्रेमी सज्जनों की सेवा में यह कोश प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता तथा आत्मसन्तोष की अनुभूति हो रही है। हमारे लिए संस्कृत भाषा-व्याकरण के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य वेद का स्वाध्याय ही है। वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य तथा भारतीय धर्म - संस्कृति का मूल स्रोत है। वेद ही परमात्मा का शब्द-शरीर तथा प्रत्यक्ष रूप है। वेद का पाठ तथा स्वाध्याय करना हमारा परम धर्म है। हमारी मान्यता है कि वेद भगवान् ही हमारे गुरु हैं। हमारी मान्यताएँ, चिन्तन तथा आचार-विचार वेद के अनुकूल होना चाहिए।

इसके लिए वैदिक पदों (शब्दों) का अर्थ जानना आवश्यक है। वैदिक शब्दकोश उपलब्ध न होना इस दिशा में बहुत बड़ा अभाव था। जो संस्कृत शब्दकोश उपलब्ध हैं, उनमें स्पष्ट कहा गया है कि उसमें वैदिक शब्दों को स्थान नहीं दिया जा सका है। प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश इस अभाव की पूर्ति करने का विनम्र प्रयास है। सभी वैदिक विद्वान् इस बात पर सहमत हैं कि वैदिक संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया शब्द धातुज हैं। शेष सर्वनाम, संख्या, अव्यय, निपात, उपसर्ग आदि के अर्थ निश्चित ही होते हैं। इस शब्दकोश में इस बात का पूर्णतः पालन किया गया है। इस शब्दकोश में चारो वेदों के सभी शब्द या पद आ गये हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। भविष्य में बृहद् वैदिक शब्दकोश में चारो वेदों के सभी शब्दों को सम्मिलित करने की योजना है। इस शब्दकोश के आगामी संस्करणों में शब्दों या पदों की संख्या निरन्तर बढ़ाते हुए इसे पूर्णता प्रदान करने का प्रयास किया जायेगा। हम स्वीकार करते हैं कि इस शब्दकोश में अभी संशोधन-परिष्कार की आवश्यकता है। आगामी संस्करणों में हम यथासम्भव इसका प्रयास करेंगे।

इस कोश में वैदिक संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया पदों के साथ ही उपसर्ग, अव्यय-निपात, संख्या तथा सर्वनाम पदों का भी संकलन किया गया है। भविष्य

में हमारे द्वारा प्रस्तुत पञ्चाङ्ग धात्वादि कोश की सम्पूर्ण सामग्री भी इस वैदिक शब्दकोश में समाहित कर इसे सम्पूर्ण करने का विचार है। इस प्रकार का वैदिक शब्दकोश प्रथमतः प्रस्तुत किया जा रहा है, अतः इसके विषय में परिचय प्राप्त कर लेना उपयोगी होगा। इस कोश का मुख्य उद्देश्य जन सामान्य को सरलता से वैदिक संस्कृत भाषा से परिचित कराना है। अतः इसमें व्यावहारिकता तथा सरलता का विशेष ध्यान रखा गया है। परम्परागत शास्त्रीय संस्कृत व्याकरण से अपरिचित सज्जन भी इसका लाभ उठा सकें, इसका ध्यान रखते हुए इसमें कुछ नूतन दृष्टिकोण अपनाया गया है। अनन्ताः वै वेदाः की उक्ति के अनुसार स्पष्ट है कि वैदिक शब्दों का अर्थ-गाम्भीर्य तथा विस्तार अनन्त है। इसका अर्थ है कि वैदिक शब्दों तथा पदों के अर्थ अनन्त हैं। व्यावहारिक दृष्टि से इतना समझ सकते हैं कि वैदिक शब्द अनेकार्थी होते हैं। इससे छोटे से शब्द तथा मन्त्र में बहुत कुछ कह दिया गया है। इस तथ्य को गागर में सागर की उक्ति ही व्यक्त कर सकती है। अनेक अर्थों में उपयुक्त अर्थों का चयन तो अध्येता के विवेक की ही अपेक्षा रखता है। शब्दकोश इसमें एक सीमा तक ही सहायता कर सकता है। हम इस मर्यादा को स्वीकार करते हैं।

इस वैदिक शब्दकोश की रचना प्रक्रिया भी इसकी सरलता तथा इस व्यावहारिक स्वरूप को स्पष्ट करती है। वेद के अध्ययन में छात्रों की सरलता के लिए वैदिक शब्दों तथा धातुओं का संकलन करना प्रारम्भ किया गया था। पर्याप्त मन्थन के पश्चात् कोश को इस रूप में प्रस्तुत करने का निश्चय किया गया। इस कोश से वेद तो क्या, संस्कृत भाषा से भी अपरिचित छात्रों का भय दूर हुआ और उत्साहपूर्वक वेद के स्वाध्याय में प्रवेश सम्भव हो सका। अतः इसकी व्यावहारिक उपयोगिता तो स्पष्ट हो ही चुकी है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस वैदिक शब्दकोश के साथ ही सरल वैदिक व्याकरण तथा वैदिक धात्वादि कोश भी प्रस्तुत किया गया है। अन्ततः वैदिक शब्दकोश में चारो वेदों में आये सभी पदों को स्थान मिल जाना चाहिए। यह हमारा संकल्प है। यह कार्य सुदीर्घ प्रयास की अपेक्षा रखता है।

अब तक उपलब्ध संस्कृत शब्दकोशों में वैदिक शब्द नहीं दिये गये हैं

तथा वैदिक शब्दकोश उपलब्ध नहीं था। हमारे सरल वैदिक व्याकरण, वैदिक धात्वादि कोश तथा वैदिक शब्दकोश की सहायता से साधारण छात्र भी वैदिक तथा लौकिक संस्कृत शब्दों का अर्थ सरलता से समझ सकते हैं।

वेद के अध्ययन में यह बात दृढ़ता से स्वीकृत है कि वेद के सभी संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया शब्द धातुज हैं। अतः धातु-ज्ञान के विना वैदिक शब्दों का अर्थ नहीं किया जा सकता है। सामान्यतः यह तथ्य लौकिक शब्दों के लिए भी सत्य है। पाणिनीय धातुपाठ में 1970 धातुएं हैं तथा पाणिनि से पूर्ववर्ती काशकृत्स्न के धातुपाठ में धातुओं की संख्या इससे बहुत अधिक है। प्रमुख वेदभाष्यकारों ने वेदमन्त्रों का अर्थ करते हुए कुछ ऐसी धातुओं का भी निर्देश किया है जो सामान्यतः धातुकोश में उल्लिखित नहीं हैं। हमने इस कोश में उन सभी धातुओं को समाहित करने का प्रयास किया है जो हमें कहीं भी उपलब्ध हो गयीं हैं। इससे यह कोश बहुत उपयोगी तथा व्यापक बन गया है।

परम्परागत धातुपाठ में अनुबन्ध आदि के साथ धातुओं का उल्लेख किया जाता है। प्रयोग काल में उनका रूप भिन्न हो जाता है। परम्परागत व्याकरण शास्त्र में अध्ययन काल तथा प्रयोग काल में धातुओं के पृथक रूप माने जाते हैं। जन-सामान्य को प्रायोगिक रूप की ही आवश्यकता होती है। इस धातुकोश में धातुओं के अध्ययनकाल के शास्त्रीय स्वरूप के स्थान पर प्रायोगिक स्वरूप को प्रमुखता प्रदान की गयी है। इसमें यथासम्भव सभी धातुओं को प्रायोगिक स्वरूप में स्थान देने का प्रयास किया गया है। प्रयोग काल में कुछ धातुओं के विविध रूप प्रचलित हैं जिन्हें शास्त्रीय दृष्टि से एक धातु माना गया है, जैसे गम् तथा गच्छ। हमने सरलता तथा सुविधा के लिए उन रूपों को पृथक् धातु के रूप में स्थान दिया है। इससे छात्रों को शब्दों तथा पदों में निहित धातुओं को समझने में बहुत सुविधा हुई है।

संस्कृत शब्दों को मूलतः तीन भागों में विभाजित किया जाता रहा है - नाम, धातु, निपात। नाम में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों को सम्मिलित किया जाता है। निपात में वे शब्द होते हैं जिनमें नामिक या क्रिया (आख्यातिक) विभक्ति नहीं जुड़ती है। सामान्यतः उनको अव्यय भी कह सकते हैं। निपात में

विशिष्ट शाब्दिक अर्थ न रखने वाले ऐसे शब्द भी हैं जो पाद-पूरणार्थ या विशेष बल देने के लिए प्रयोग किये जाते हैं। स्वाभाविक रूप से इनमें विभक्तियाँ नहीं जुड़ती है, अर्थात् इनके रूप नहीं चलते हैं। इसी अर्थ में ये अव्यय हैं। इसी रूप में उपसर्ग को भी हम अव्यय या निपात वर्ग में रख सकते हैं। वेद में उपसर्ग, अव्यय, निपात में भेद नहीं है। कह सकते हैं कि वेद के कुछ अव्यय शब्दों ही लौकिक संस्कृत में उपसर्ग के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। संख्या तथा सर्वनाम शब्द संस्कृत वाक्यों में विशेषण के रूप में प्रयोग होते हैं तथा उनकी विभक्तियाँ अथवा रूप अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। व्यावहारिक दृष्टि से इनकी संख्या सीमित होने तथा शब्द-रूप बनाने के स्थान पर शब्दार्थ सीखना सरल प्रतीत होने के कारण हमने संख्यावाची पदों तथा सर्वनाम पदों को भी अव्यय के समान स्वतन्त्र रूप में इस कोश में स्थान दे दिया है। ऐसा केवल व्यावहारिकता तथा सरलता की दृष्टि से किया गया है। यह प्रयोग भी उपयोगी सिद्ध हुआ है।

धातु शब्द का मूल अर्थ है वह शब्दांश जो शब्दों या पदों के मूल अर्थ को धारण करता है, अथवा शब्द या पद जिसको अर्थवत्ता अथवा सार्थकता के लिए धारण करते हैं। इससे स्पष्ट है कि धातु को जानकर ही शब्दों या पदों का अर्थ जाना जा सकता है। इस मूल भावना को ध्यान में रखकर ही उपसर्ग, निपात-अव्यय, संख्या, सर्वनाम को भी इस कोश में स्थान दिया गया है। इस प्रकार यह धात्वादि कोश एक प्रकार से सम्पूर्ण कोश बन जाता है। इस कोश की सहायता से सभी शब्दों-पदों का अर्थ जानना सरल हो जाता है। इसके अतिरिक्त केवल विभक्तियों तथा प्रत्ययों की जानकारी शेष रह जाती है। प्रत्ययों का कोश भी संकलित किया जा सके तो उपयोगी रहेगा। हम मानते हैं कि वास्तव में सम्पूर्ण शब्दकोश बनाना तो असम्भव है।

इस कोश में शब्दों का क्रम वर्णमाला के अनुसार रखा गया है। वर्णमाला में अक्षरों को उच्चारण स्थान के अनुसार ही रखा जाता है। यही वैदिक संस्कृत भाषा तथा वर्णमाला की विशेषता तथा वैज्ञानिकता है। उच्चारण स्थान के अनुसार वर्णक्रम कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य के रूप में होना

चाहिए। इस प्रकार स्वरों का क्रम अ, इ, ऋ, ऌ, उ रहेगा। ऋ, ऌ स्वरों का प्रयोग न्यून होने के कारण सामान्यतः विद्यार्थी अ, इ, उ का क्रम बोलते हैं। इसी प्रकार संयुक्त अक्षरों के विषय में भी कठिनाई होती है। त्त, क्ष, ज्ञ, श्र आदि अनेक संयुक्ताक्षरों का शुद्ध उच्चारण न जानने के कारण विद्यार्थी शब्दों को कोश में खोज नहीं पाते हैं। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए ही हम विषय-सूची में वर्णक्रम सूची दे रहें हैं। सामान्यतः कोश में इसकी आवश्यकता नहीं मानी जाती है। इसके साथ ही हम वर्णमाला भी दे रहे हैं। उसमें संयुक्ताक्षरों की स्थिति भी स्पष्ट हो जायेगी। इसे सरल वैदिक व्याकरण पुस्तक से लिया गया है।

अनुस्वार का प्रयोग सामान्यतः पञ्चमाक्षरों (ङ्, ञ्, ण, न, म्) के स्थान पर विकल्प रूप में किया जाता है। इस कोश में शब्दों को पञ्चमाक्षरों के अनुसार क्रम से ही खोजना चाहिए। य, र, ल, व, श, ष, स, ह वर्णों से पूर्व उनके उच्चारण स्थान वाले पञ्चमाक्षरों के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग मिलता है। अनुस्वार तथा विसर्ग स्वर के पश्चात् ही आते हैं। अतः माना जाना चाहिए कि शब्दों के क्रम में इनकी उपस्थिति से कोई अन्तर नहीं पड़ता है, अर्थात् किसी स्वर के पश्चात् व्यञ्जन के क्रम से शब्द आते रहते हैं। इनको उस स्वर के पश्चात वाले व्यञ्जन का क्रम पूर्ण होने पर अन्त में स्थान दिया गया है। उदाहरण के लिए अंह को अह के पश्चात् देखा जाना चाहिए तथा अतः को अत के पश्चात्।

वैदिक भाषा और संस्कृत की संरचना में सूक्ष्म अन्तर मिलता है। वेद में उपसर्ग और धातुएँ संस्कृत से अधिक हैं। विभक्तियों में बहुलता है तथा विकल्प भी स्वीकार्य हैं। वैदिक संस्कृत विश्व की प्राचीनतम, सर्वाधिक समृद्ध सशक्त तथा वैज्ञानिक भाषा है। विश्व का प्राचीनतम ज्ञान-विज्ञान तथा संस्कृति की धरोहर संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित है। विश्व का प्राचीनतम साहित्य वेद भारतीय संस्कृति का मूल आधार तथा संस्कृत भाषा की अनुपम देन है। अतः मानवता के विकास के प्राचीनतम सोपान को सुरक्षित रखने के लिए वैदिक संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक है। यह सर्वमान्य है कि वैदिक भाषा प्राचीनतम

है। उसके व्याकरण सम्बन्धी नियमों में सरलता है, अतः वह सीखने तथा प्रयोग करने में सरल है। उसमें भाषा सौन्दर्य के लिए विविधतापूर्ण प्रयोग भी हैं।

प्राचीनतम साहित्य वेद की भाषा ही शुद्ध देववाणी है। व्यापक नियमों के अनुकूल होते हुए भी अनेक वैदिक प्रयोगों को प्रचलन से बाहर कर दिया गया। इसे उचित नहीं माना जा सकता है। उचित यही है कि उपयोगी वैदिक प्रयोगों को त्याज्य न समझें, सम्मान सहित प्रयोग किया जाये। वैदिक प्रयोगों की उपेक्षा करना संस्कृत को अशुद्ध बनाना है। वैदिक भाषा में परिवर्तन से बने रूप को शुद्ध देववाणी नहीं कहा जा सकता है। भारोपीय या आर्यभाषा परिवार की भाषाओं का मूल वैदिक संस्कृत ही है। अतः इसे भारत से यूरोप - अमेरिका तक प्रचलित सभी प्रमुख भाषाओं का मूल रूप माना जाता है। शब्दावली तथा व्याकरण संरचना की समानता के कारण आधुनिक भाषा विज्ञान में इन सभी भाषाओं को एक भाषा परिवार की मान्यता प्राप्त है।

व्याकरण के अन्तर्गत किसी भाषा की शब्द-रचना तथा वाक्य रचना में प्रयुक्त सामान्य प्रवृत्तियों तथा नियमों को निरूपित किया जाता है। व्याकरण का एकमात्र उद्देश्य भाषा सीखना है। इसका लक्ष्य भाषा को एकरूपता तथा वस्तुनिष्ठता प्रदान कर नियमबद्ध तथा सरल बनाना है, उसे जटिल तथा दुरूह बनाना नहीं।

भाषा विज्ञान को व्याकरणों का व्याकरण कहा जाता है। व्याकरण में बताया जाता है कि भाषा में शब्द तथा वाक्य रचना के नियम क्या हैं। भाषा विज्ञान में यह जानने का प्रयास किया जाता है कि भाषा में शब्द तथा वाक्य रचना का वह रूप कैसे विकसित हुआ। व्याकरण यह बता देता है कि वेद में शब्द प्रयोग के नियम क्या थे और बाद में लौकिक संस्कृत में शब्दों के प्रयोग किस रूप में होने लगे। भाषा विज्ञान यह जानने का प्रयास करता है कि वेद में जो नियम थे, उनमें परिवर्तन कैसे हुआ।

वेद तथा संस्कृत भाषा के तटस्थ सर्वेक्षण तथा व्याकरण के स्वतन्त्र विश्लेषण से सरल वैदिक व्याकरण प्रणाली का विकास करने में सफलता मिली है। संस्कृत भाषा सीखने में शब्दरूप तथा धातु रूप रटना कठिन समस्या

रही है। प्रस्तुत पद्धति इस समस्या का सुगम समाधान खोजने का विनम्र प्रयास है। इस प्रणाली में शब्द रूप तथा धातु रूप नहीं रटना पड़ता है तथा सूत्रों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इनके स्थान पर नामिक एवम् आख्यातिक विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग सीखना सरल है।

सरल संस्कृत व्याकरण में तीन मुख्य सिद्धान्त अपनाये गये हैं, 1. मूल नियम, 2. व्यापक प्रयोग 3. विकल्प। परम्परागत व्याकरण के मूल नियमों को पूर्ण महत्व देते हुए सबसे पहले सिखाया गया है। जहां मूल नियम के स्थान पर अपवाद को अपनाने की परम्परा है, वहां उनके स्थान पर व्यापक प्रयोग वाले नियमों को अपनाया गया है। ऐसे व्यापक प्रयोग वाले नियमों को सर्वत्र अपनाने की परम्परा को वरीयता दी गयी है तथा अपवादों को विकल्प के रूप में मान्यता प्रदान की गयी है। इसका अर्थ है कि मूल नियम तथा व्यापक प्रयोग वाले सार्व नियमों के प्रयोग को महत्व प्रदान किया गया है तथा अपवादों को विकल्प के रूप में बाद में सिखाने की नीति अपनायी गयी है।

कुछ उपसर्ग और अव्ययों में त्य आदि प्रत्यय जुड़कर नामिक शब्द बन जाते हैं। फिर उनमें नामिक विभक्ति लग जाती है। महर्षि पाणिनि ने एक सूत्र में इस नियम का उल्लेख किया है। इस प्रकार नि उपसर्ग में त्य प्रत्यय जुड़कर नित्य शब्द बना। जिसका बहुवचन नित्यासः बना। इस शब्द का अर्थ नि उपसर्ग के अर्थ से लिया जायेगा। अतः नित्यासः शब्द का अर्थ निरन्तर बने रहना ही है।

उपसर्ग तथा अन्य अव्यय शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नामिक शब्द बनते हैं। ऐसे अव्ययज अथवा निपातज शब्द संज्ञा और विशेषण बन जाते हैं परन्तु उन अव्यय अथवा निपात शब्दों से क्रियाएँ नहीं बनतीं हैं। अर्थात् उनमें आख्यातिक अथवा क्रिया विभक्तियाँ नहीं जुड़ती हैं। इस प्रकार नामिक अर्थात् संज्ञा तथा विशेषण शब्द दो प्रकार के हो जाते हैं - धातुज तथा अधातुज अथवा अव्ययज या निपातज। कुछ शब्द ध्वनि के अनुसार होते हैं, जिनकी कोई धातु नहीं होती है। उन्हें ध्वन्यानुसारी शब्द कहते हैं। जैसे - चिश्चा।

जिन शब्दों के क्रिया रूप मिल जाते हैं, उनकी धातु स्वीकार्य मानी

जाती है, भले ही किसी धातुकोश में वह धातु हो अथवा नहीं। (सिच्यते - सिच - यजु. 19/15)। हिंसा के भाव वाली धातुओं में गति का भाव निहित होता है तथा गत्यर्थक धातुओं में जानना, पाना का भाव निहित होता है। वेद को श्रुति भी कहते हैं। प्राचीनकाल में गुरु से सुनकर ही शिष्य ज्ञान प्राप्त करते थे अतः वेद में श्रु-श्रवण धातु का अर्थ जानना, विद्वान होना भी स्वाभाविक रूप से माना जाना चाहिए। श्रवस्यवः आदि शब्द विद्वान्, सुनाने वाले, सुनने वाले के लिए प्रयोग किये गये हैं।

धातु अथवा शब्द के प्रथम स्वर से पूर्व अ लगता है तथा सन्धि हो जाती है। इसे परम्परागत व्याकरण में सन्धि प्रकरण में गुण कहा गया है। इस प्रकार अ जुड़ने को प्रत्यय भी माना जाता है। यदि पहले से अ, आ है तो दोनों मिलकर दीर्घ आ हो जायेंगे, इसी प्रकार इ होने पर ए, तथा उ होने पर ओ हो जाते हैं। उदाहरण के लिए रम् से राम, कम् से काम शब्द बनते हैं। इक प्रत्यय लगने पर भी ऐसा होता है। वेद में इक प्रत्यय जुड़ने पर वैदिक शब्द बनेगा। वैदिक शब्द का अर्थ है - वेद से उत्पन्न, वेद से सम्बन्धित, वेद से युक्त। यह प्रत्यय स्वार्थ अर्थात् स्वयम् के अर्थ में भी लगता है। इसका अर्थ है कि कम तथा काम शब्द के अर्थ समान होंगे।

लोकभाषा में पञ्चमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग अधिक होने लगा है। यह अनुचित है। इससे उच्चारण अशुद्ध होता है तथा अर्थ भी अस्पष्ट हो सकता है। हमने अनुस्वार (ं) के स्थान पर क से म तक पञ्चमाक्षर का प्रयोग करने का प्रयास किया है। य, र, ल, व, श, ष, स के पहले आने वाले अनुस्वार (ं) को तालव्य, मूर्धन्य और दन्त्य स्थान के अनुसार शब्द क्रम में रखा गया है। इसी प्रकार ह से पहले आने वाला अनुस्वार (ं) स्वाभाविक रूप से ङ के स्थान पर है। ङ के स्थान पर अनुस्वार (ं) को स्वीकार किया गया है। इससे सभी को सरलता होती है। विसर्ग (:) का उच्चारण स् (सूक्ष्म) अथवा ह् (सूक्ष्म) के रूप में है। अतः इसको शब्दकोश में इसी क्रम में स्थान दिया गया है।

इस प्रयास से वेद तथा देववाणी संस्कृत भाषा से जन-सामान्य को

परिचित कराने में सहायता मिलेगी, ऐसा हमारा विश्वास है। इसमें न्यूनतायें सम्भव हैं, परन्तु एक दिशा तो मिल ही गयी है। दोषदर्शन की तुलना में श्रेष्ठतर प्रयास करना सदैव सम्मान्य तथा अनुकरणीय रहा है। इस शैली में अधिक उत्तम तथा परिष्कृत कार्य किये जा सकते हैं। भविष्य में विद्वान् अधिक उत्तम, निष्पक्ष तथा प्रामाणिक वेदार्थ प्रस्तुत करेंगे, ऐसी आशा- अपेक्षा करना स्वाभाविक है। आशा है कि हमारे सहयोगी इस कार्य को पूर्ण करेंगे। शेष जीवन काल में हमसे जो कुछ बन पड़ेगा, सेवा करने का प्रयास करते रहेंगे।

हमने चारो वेदों के सरल पाठ में मन्त्रों का सन्धियों से मुक्त पाठ प्रस्तुत किया है। इसका अर्थ है कि पदान्त में अन्य पद की सन्धि नहीं होती है। सरल पाठ में क्रिया विभक्ति अथवा नामिक विभक्ति के पश्चात् कोई शब्द या पद सन्धि के द्वारा नहीं मिलाया जाता है। इसी प्रकार अव्यय आदि शब्दों में जहाँ विभक्ति का लोप होता है, उनके अन्त में भी किसी पद या शब्द या शब्दांश की सन्धि नहीं होती है। इस प्रकार सरल पाठ में सभी पद पृथक् तथा स्पष्ट होते हैं। वेद मन्त्रों का सरल पाठ जनसाधारण के लिए, विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए वेद पाठ तथा अर्थ समझने की दृष्टि से बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। इस शब्दकोश में सरल पाठ के अनुसार पदों का संकलन किया गया है। इस प्रकार हमने पदार्थ या शब्दार्थ करने में तटस्थता, निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता तथा प्रामाणिकता का ध्यान रखने का पूर्ण प्रयास किया है। फिर भी यदि कोई भूल-चूक रह गयी होगी तो विद्वानों के मार्गदर्शन के अनुसार भविष्य में संशोधन-परिष्कार किया जा सकता है।

पदार्थ में मुख्यतः धातुज शब्दों में धातु स्पष्ट करना आवश्यक माना गया है। अन्य पदों सर्वनाम, अव्यय, संख्या, उपसर्ग आदि के अर्थ को लेकर कोई मतभेद नहीं है। संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रियाएं धातुज हैं। उनमें धातु स्पष्ट कर देने से वास्तविक शाब्दिक अर्थ स्पष्ट हो जाता है। कुछ धातुएं अनेकार्थी भी होती हैं। मन्त्र में जिस अर्थ की उपयोगिता हो, उसे ग्रहण कर सकते हैं। धातु के एक से अधिक अर्थों के अनुसार भी यदि मन्त्र का अर्थ हो सकता है तो श्लेष के रूप में स्वीकार्य है। इसमें विचारधारा को लेकर कोई दुराग्रह नहीं होना चाहिए।

हमें वेद के विचारों को महत्व देना चाहिए, वेदमन्त्रों का अर्थ अपने विचार के अनुसार करने का दुराग्रह उचित नहीं है। वेदमन्त्रों का सरल स्वाभाविक शाब्दिक अर्थ सभी अध्येता सहज रूप से जानें तथा उसका चिन्तन-मनन कर स्वयम् अपने विवेक के अनुसार विचार विकसित करें। इसके पश्चात् भावार्थ तथा व्याख्या प्रत्येक व्यक्ति अपने विवेक के अनुसार स्वतन्त्र रूप से कर सकता है।

अब तक विद्वानों ने जो भी प्रयास किये, उससे ही वेद के अध्ययन को दिशा मिली तथा हम इस प्रकार निष्पक्ष प्रामाणिक वेदार्थ करने का प्रयास कर पा रहे हैं। वैदिक शब्दकोश बन जाने से सामान्य अध्येताओं को भी वेद के अध्ययन में सरलता होगी तथा भविष्य में विद्वान् अधिक उत्तम, निष्पक्ष तथा प्रामाणिक वेदार्थ प्रस्तुत करेंगे, ऐसी आशा - अपेक्षा करना स्वाभाविक है।

स्वामी शरण

लाजपत नगर, कानपुर

ॐ

वैदिक शब्दकोश

अ

अकः = प्रगतिशील (अक् - जाना, जानना, पाना, टेढ़ा जाना कुटिल गति करना)।

अकल्पयन् = कल्पना की (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कल्प् - कल्पना करना)।

अकायम् = अज्ञेय, जानने वाला (अ - नहीं, अक् - जाना, जानना पाना, कि-कय - जानना, समझना)।

अक्षभिः = अक्षों द्वारा, दृष्टि द्वारा, व्यापक, व्याप्त, अविनाशी, खेल, क्रीड़ा, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक होने वाले द्वारा (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)।

अगात् = प्राप्त है, विद्यमान है (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग। गम् - जाना। अग - जाना, जानना, पाना)।

अगाम् = गया (गम् - जाना)।

अग्निः = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, गतिस्वरूप (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्निना = अग्नि द्वारा, अग्नि के साथ (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्निम् = अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अग्ने = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, ग्रहण करना)।

अग्मन् = गये (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गम् - जाना)॥

अग्रतः = अग्रणी (अग् - जाना, आगे जाना)।

अग्रे = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।

अघशंसो = पापी, अपराधी (अघ् - पाप, अपराध करना, शंस् - इच्छा करना, प्रशंसा करना)।

अघ्न्याः = अहिंसक (अ - नहीं, घ्न्, हन् = हिंसा करना)।

अङ्ग = अङ्ग, विद्वान्, गतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अङ्गिरः = विद्वान्, गतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)॥

अङ्गैः = अंगों द्वारा, विद्वान्, गतिशील, पाने वालों द्वारा (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)।

अच्छा = अच्छा, श्रेष्ठ, सुन्दर, स्वच्छ (अच्छ् - अच्छा होना, निर्मल करना)।

अच्युतच्युत् = अचल को चल करने वाला (अ - नहीं, च्यु - गिरना, भटकना, जाना)।

अजायत = उत्पन्न हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन् - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना)।

अजायन्त = उत्पन्न हुए (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन् - उत्पन्न होना)।

अजावयः = गतिशील तथा रक्षक, रक्षणीय (अज-अवयः, अज् - स्थापन, गमन, प्रक्षेपण करना, अव् - रक्षा करना)॥

अतः = इससे, इसलिए (अव्यय)।

अतन्वत = विस्तृत किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, तन् - विस्तार करना)।

अति = अतिक्रम कर, बहुत, अत्यधिक, अधिक (उपसर्ग, अव्यय)।

अति-अरिच्यत = अतिशय एकत्र किया, विस्तार किया, अलग किया

(अति - अधिक, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रिच् - एकत्र करना, जोड़ना, फैलाना, अलग करना)।

अतिक्रुष्टाय = अतिक्रुष्ट के लिए (अति - अधिक, बहुत, क्रुश - पुकारना, रोना)।

अतिथिम् = सतत गतिशील, अतिथि (अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, जाना)।

अतिरोहति = अत्यन्त बढ़ता है (अति - अधिक, रुह् - जन्म होना, बढ़ना, चढ़ना)।

अतिष्ठत् = स्थित हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, तिष्ठ् - ठहरना, स्थित होना)।

अतो = इससे (अव्यय)।

अत्येति = अतिक्रमण कर जाता है (अति - अधिक, अतिक्रम, इ - जाना)।

अथ = अब, इसके अनन्तर (अव्यय)।

अथर्वा = अविचलित-अहिंसक (अ - नहीं, थर्व - अस्थिर होना, हिंसा करना)।

अथो = इसके अनन्तर (अव्यय)।

अदीनाः = दीनताहीन, अक्षय (अ - नहीं, दी - क्षय होना)।

अदृंहत् = दृढ़ किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दृंह् = बढ़ना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)।

अद्य = आज (अव्यय)।

अधरम् = धारण किया (अधर्- न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं (अव्यय), अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धृ - धारण करना)।

अधि = अधिक, अधिष्ठाता (उपसर्ग)।

अध्वरम् = अहिंसक, अवर्णनीय (अ - नहीं, ध्वृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।

अध्वराणाम् = अहिंसकों के (अ - नहीं, धूर् - मार डालना या दुःख देना)।

अनमीवाः = निरोगी (अन् = नहीं, अम् = रोगी होना)।

अनिलम् = प्राणवान्, प्राणदाता, स्पन्दनशील चेतन (अन् - प्राण होना, चेतन होना, स्पन्दन होना)।

अनृक्षरा = अहिंसक (अन् - नहीं, ऋक्ष - मार डालना, दुःख देने का यत्न करना)।

अनृतात् = अनृत से (ऋ- जाना, फैलाना)।

अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)।

अनुपश्यतः = देखने से (अनु - पश्चात्, पीछे, दृश्-पश् - देखना)।

अनुपूर्वम् = अनुपूर्व को (अनु - पीछे, पूर्व = पहले, (सर्वनाम)।

अनुष्टुप् = अनुस्तुप, अनुस्तुति (अनु = पश्चात्, पीछे, स्तु - स्तुति करना)।

अनूच्ये = अनूच्य, अनुसम्बन्धित, अनुसंगठन, अनुवाची (अनु - पीछे, उच - सम्बन्ध होना, एकत्र होना, वद्-वच्-ऊच् - कहना, बोलना)।

अनुददाति = अनुदान करता है (अनु - पीछे, अनुकूल, दा - देना)।

अनेजत् = कम्पन रहित, गतिहीन, निर्भय (अन् - नहीं, एज् - चलना, कम्पन करना, प्रकाशित होना)।

अन्तः = बीच में, भीतर, मध्य (अव्यय, उपसर्ग, सर्वनाम)।

अन्तरिक्षम् = अन्तरिक्ष, अन्तर्दृष्टि को (अन्तः - बीच में, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, इक्ष् - स्वाद लेना, देखना)।

अन्तरिक्षे = अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, इक्ष् - स्वाद लेना, देखना)

अन्तिके = निकट, समीप (अव्यय, सर्वनाम)।

अन्धम् = अन्धकार (अन्ध - अन्धा होना, दिखाई न देना, आँखें मूंदना)।

अन्धसः = प्राणवान्, अन्धाकार से (अन् - प्राणवान् होना, अन्ध् -

अन्धकार होना, अन्धा होना)।

अन्नेन = अन्न द्वारा, प्राण द्वारा (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)।

अन्यत् = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)।

अन्यथा = अन्य प्रकार से (सर्वनाम)।

अन्यान् = अन्य को (सर्वनाम)।

अन्ये = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)।

अन्यो = अन्य (सर्वनाम)।

अपः = पालक, रक्षक् (अप् - पालन करना)।

अपधा = अपधारित, दुष्टता से रखे हुए (अप - दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना)।

अपश्रयः = अपश्रय (अप - दूर, नीचे (उपसर्ग), श्री - सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)।

अपसो = पालनकर्ता (अप - पालन करना)।

अपापविद्धम् = पाप-हीन (अ - नहीं, पाप् - पाप् होना, पाप करना, विध्-विद्ध - विधान करना, वेधना, वेध करना)।

अपाम् = अपा को, पालकों-रक्षकों को (अप - पालन करना)।

अपि = भी (अव्यय)।

अपिहितम् = ढका हुआ (हि - जाना, पाना, प्रेरणा करना, अपि-हि - आच्छादित करना, अन्तर्हित होना, ढकना)।

अपूर्वम् = अपूर्व जो पहले नहीं हुआ, विशिष्ट, विलक्षण (अ - नहीं, पूर्व - पहले, (सर्वनाम)।

अपो = पालन करने वाला (अप - जाना, जानना, पाना, पालन करना)।

अबध्नन् = बांधा (बध् - बाँधना, निश्चय करना)।

अब्रवीत् = बोला (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, ब्रू - कहना, बोलना)।

अब्रुवन् = बोले (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, ब्रू - कहना, बोलना)।

अभयम् = अभय (अ - नहीं, भी - डरना, घबराना)।

अभरन् = भरा, भरण किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ - भरण करना, भरना)।

अभवत् = हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

अभिष्टये = अभीष्ट के लिए (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इष् - इच्छा करना, चाहना, जाना)।

अभी (अभि) = सभी ओर, भलीभाँति (उपसर्ग)।

अभीशुभिः = शासन-शक्ति, अधिकार द्वारा (अभि - अभिमुख, विशेष, ईश- शासन करना, अधिकार होना)।

अभूत् = हुआ था (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना)।

अभूषत् = भूषित किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भूष् - भूषित करना, भूषित होना, शोभित होना, शोभित करना)।

अभ्यसेताम् = डराया, भयभीत किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भ्यस् - भय होना, डरना, डराना)।

अमन्थत = मथा, मन्थन किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, मथ् - मथना, मन्थन करना)।

अमन्यमानान् = न मानने वाला, अविचारशील, अमन्यमानों को (अ - नहीं, मन् - मानना, समझना, विचार करना)।

अमंस्त = प्रगति, शब्द, सेवा करें (अम् = गति, शब्द, सेवा करना)।

अमित्राः = अमित्र, अस्नेही (अ - नहीं, मिद् - प्रीति करना, स्नेह करना)।

अमृतत्वस्य = अमृतत्व का, अमरता का (अ - नहीं, मृ - मरना)।

अमृतम् = न मरने वाला,अमृत को अमर (अ - नहीं। मृ - मरना, देहत्याग करना)।

अमृतेन = अमृत द्वारा (अ - नहीं, मृ - मरना, देहत्याग करना)।

अय-क्ष्माः = गतिशील हों (अय-क्ष्माः, इ-अय् = गति करना। क्षम् - सहना, समर्थ होना, क्षमा करना)।

अयजन्त = यजन किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, यज् - देव-पूजन, संगतिकरण, दान करना)।

अयोगूम् = अयोगु को, योग-हीन को, विद्वान्, गतिमय को (अ - नहीं। अय् - गति करना, शब्द करना, युज् - योग करना, जोड़ना),

अरम् = अलम्, पर्याप्त (अव्यय)।

अरम्णात् = रमाया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना)।

अराः = अरें (अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।

अरातयः = अदानी (अ - नहीं, रा = देना)।

अरातयो = अदानी (अ - नहीं, रा = देना)।

अरातेः = अदानी का (रा = देना)।

अरिणात् = गतिमान किया, बहाया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रि-री - जाना, लेना। रिण - शब्द करना, चूर्ण होना, अल्प होना)।

अरिष्टनेमिः = अत्यन्त हिंसक, अहिंसक, गतिशील, व्यापक को जानने, प्राप्त करने वाले (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना, नी - जाना, जानना, पाना, प्राप्त करना, पहुँचना)।

अरिष्यन्तो = अहिंसा करते हुए, हिंसा न करते हुए (अ - नहीं, रिष्-हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)।

अर्कैः = अर्कों द्वारा, स्तुतियों द्वारा (अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)।

अर्चिषे = अर्चनीय के लिए (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)।

अर्थान् = अर्थों को (अर्थ - मांगना, चाहना)।

अर्यः = अर्य को, प्रगतिशील को (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।

अर्यमा = अर्यमा, प्रगति (ऋ - जाना, पाना, मिलाना)।

अर्वाक् = पहले (अव्यय)।

अर्षत् = अन्तर्यामी (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना)।

अव = नीचे, दूर, प्राप्त (उपसर्ग)।

अवत = रक्षा करो (अव् - रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवति = रक्षा करता है (अव् - रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अवरे = अवर, अवरणीय, अधम में (अ - नहीं, वृ-वर्-वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, अवर - नीचे (उपसर्ग, सर्वनाम)।

अवरेभ्यः = अवरों से, अश्रेष्ठों से (अ - नहीं, वर - इच्छा करना, आशा करना)।

अवर्तत = वर्तमान हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृत् = वर्तना, वर्तमान होना)।

अवसा = रक्षण से (अव् - रक्षा करना)।

अवसे = रक्षा के लिए, रक्षा करते हो (अव् - रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

अविता = रक्षक (अव् - रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना)।

अविदम् = जान लिया, पा लिया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विद्-विन्द - पाना, समझना, जानना, वास करना)।

अविद्यया = अविद्या द्वारा (अ - नहीं, विद - जीना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

अविद्याम् = अविद्या को (अ - नहीं, विद - जीना, विद्यमान होना,

रहना, जानना, समझना)।

अविद्यायाः = अविद्या से (अ - नहीं, विद - जीना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

अविन्दत् = प्राप्त किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विन्द - प्राप्त करना, सम्पादित करना)।

अवोभिः = रक्षाओं द्वारा (अव् - रक्षा करना)।

अव्यसः = अव्यापक, बन्धन, पालन, रक्षा करने वाला (अ - नहीं, वी - व्याप्त होना, व्यापना। अव्य - बाँधना, पालन-रक्षण करना)।

अव्रणम् = व्रणहीन, घावहीन (अ - नहीं, व्रण - क्षत करना, घाव करना)।

अशेमहि = व्याप्त होते हैं, भोजन करते हैं (अश् - भोजन करना, तीव्रता से पहुँचना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना)।

अश्नवत् = व्याप्त होता है, प्राप्त होता है (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

अश्नुते = भोग करता है, प्राप्त करता है (अश् - भोजन करना, व्याप्त होना)।।

अश्मनोः = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त (अश् - भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)।

अश्वस्य = अश्व का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का (अश् - व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्वा = अश्व, द्रुतगामी, व्यापक (अश् - व्याप्त होना, जाना, द्रुतगति से चलना, पाना, पहुँचना, संग्रह करना, ढेर करना)।

अश्वान् = अश्वों को, व्यापक को, घोड़ों को (अश- पहुँचना, पाना,

व्याप्त होना)।

अश्वासः = अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् - व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

अश्विना = अश्विन, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् - व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।

असत् = हो जाता है (अस् - होना)।

असति = प्रकाशित होता है, चमकता है (अस् - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

असम्भवात् = सम्यक् रूप से न होने से (अ - नहीं, सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

असम्भूतिम् = सम्यक् रूप से नहीं होने वाले को (अ - नहीं (उपसर्ग)। सम् - सम्यक्, भू - होना)।

असि = हो (अस् - होना)।

असृजत् = सृजन किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृज्- सृजन करना, रचना करना, बनाना, विविध रूप से उत्पादन करना)।

असुः = प्रकाश (अस् - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

असौ = यह (सर्वनाम)।

अस्तभ्नात् स्थापित किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, स्तम्भ - दृढ़ होना, अचल होना, स्तब्ध होना)।

अस्ति = है (अस् - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।

अस्तु = हो (अस् - होना)।

अस्नाविरम् = स्नायु हीन (अ - नहीं, स्नु - झरना, टपकना, बहना, स्ना - स्नान करना, शुद्ध होना)।

अस्फुरद् = स्फुरण किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, स्फुर - हिलाना, फैलना)

अस्मत् = हमसे, मुझसे (अपादान, बहुवचन)।

अस्मभ्यम् = हमारे लिए (सर्वनाम)।

अस्मान् = हमें, हमको (सर्वनाम)।

अस्ति = है (अस् - होना)।

अस्मिन् = इसमें (सर्वनाम)।

अस्मे = हमारा, हममें, हमारे लिए (सर्वनाम)।

अस्मै = हमारे लिए (सर्वनाम)।

अस्य = इसका, इसकी (सर्वनाम)।

अहम् = मैं (सर्वनाम)।

अहानि = दिन (अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना)।

अहिम् = अहि को, व्यापक को (अ - नहीं (उपसर्ग)। हि - चलना, जाना, जानना, पाना, वृद्धि करना, प्रेरणा करना।अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।

आ

आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)।

आकूतिः = आ-कूति, वाणी को, शब्द (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, कू - शब्द करना)।

आक्रयाया = आक्रय के लिए (आ - सम्यक् रूप से, समन्तात्, क्री- खरीदना, विनिमय करना, जीतना)।

आ-गमत् = गतिमान, जाने वाले, जाता है, गया (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। गम् = जाना, जानना, पाना)॥

आजमीढासो = प्रगतिशील विद्वान्, प्रगतिशील सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आगम, अज् - जानना, जाना, पहुँचना, स्थापित करना, फेंकना, आ-अज - आना, मिह् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण

करना, गीला करना)।

आज्यम् = आज्य, प्रक्षेपण, स्थापन, गमन में समर्थ को (अज् - स्थापन, गमन, प्रक्षेपण करना)।

आतस्थिवांसा = सम्यक् स्थित (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, स्था - ठहरना, स्थित होना)।

आत्म = आत्मा (आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)।

आत्मदा = आत्मदाता (आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना, दा - देना)।

आत्मनि = आत्मा में (आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)।

आत्महनो = आत्मा का हनन करने वाले (आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना। हन् - मारना, हिंसा करना)।

आत्मानम् = आत्मा को (आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)।

आदद् = दे दिया (आ-सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, दा-देना)।

आदित्यः = आदित्य (अदिति, अ - नहीं, दी - क्षय होना)।

आदित्ये = आदित्य, अदिति से उत्पन्न, अदिति से सम्बन्धित (अ- दिति, अ - नहीं, दी - क्षय होना, दो - खण्डन करना)।

आनशानाः = समन्तात् नाश करते हुए, प्राण-चेतना को तीक्ष्ण करते हुए (आ - समन्तात, सम्यक्, नश् - नाश होना।अन् - चेतन होना, प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना।शान - तीक्ष्ण करना, पैना करना, धार रखना। शण - दान करना, जाना, जानना, शब्द करना)।

आपः = आप, व्याप्त, व्यापक, पालक-रक्षक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।

आपो = व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना)।

आप्नुवन् = पा सके (आप् - जाना, पाना, व्याप्त होना)।

आ प्यायध्वम् = वृद्धि करें, बढ़ें (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, आगम, प्याय् - बड़ा होना, बढ़ना)।

आबभूव = हो गया है (आ - समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, (उपसर्ग), भू - होना)।

आयन् = आते हुए, शासन करने वाले, शब्दकर्ता (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय्-ई - जाना, आय - शब्द करना, शासन करना)।

आ-याहि = आयें, आइए (**आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **या** = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

आयुः = आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय - जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु - मिलना, अलग करना)।

आरण्याः = आरण्य (अरण्य, अ - नहीं, रण् - शब्द करना, चलना, युद्ध करना)।

आरुजे = आरोग्यकारी (रुज - रोग होना, आ-रुज - आरोग्य होना)।

आरोहत् = आरोहण किया, चढ़े, बढ़ें (**आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

आर्त्नी = सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)।

आवन् = रक्षा-पालन करते हुए (अव् - रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।

आ वृताः = आवृत, ढका हुआ, वर्ताव, वाणी (वृत - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, हिंसा करना, चमकना, बोलना, वरण करना, आवरण करना)।

आशाः = आशायें (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् - आशीर्वाद देना, बोध करना, शासन करना, भला चाहना, आशा करना)।

आसन् = थीं (अस् - होना)।

आसन्दीम् = आसन, बैठने का साधन, स्थान को (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्‌यमान होना, जीवित रहना, होना)।

आसादः = सम्यक् स्थापित (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, साद् - स्थापित करना)।

आसीत् = था (अस् - होना)॥

आ-सुव = लाइये, भेज दीजिये (सू - जाना, चलना, भेजना, उड़ाना)॥

आस्तरणम् = आस्तरण, बिछौना (आ - समन्तात, सम्यक्, सम्पूर्ण। स्तृ - विस्तर होना, विस्तार होना, फैलना)।

आस्ताम् = थे (अस् - होना)।

आहुः = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)।

आहुतः = समन्तात् प्रदत्त, आह्वान किये, बुलाये हुए (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु - ह्वे - आह्वान करना, दान करना, आदान-प्रदान करना)।

इ

इडः = स्तुति का (इड् - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् - स्तुति करना)।

इत् = ही (अव्यय)।

इतराः = अन्य (अव्यय)।

इति = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)।

इत्था = इत्था इस प्रकार (अव्यय)।

इदम् = यह, इसको (सर्वनाम)।

इध्मः = प्रकाशक (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इध्यसे = गति, ज्ञान, प्रकाश करते हो (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)।

इन्द्र = परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रः = परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रस्य = इन्द्र के, परम ऐश्वर्यवान् के (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्राग्नी = इन्द्र और अग्नि (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना)।

इन्द्राय = परम ऐश्वर्य के लिए (इदि-इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)।

इन्द्रावरुणा = इन्द्र और वरुण (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना, वृ - वरण करना)।

इन्द्रासोमा = इन्द्र और सोम (इन्द - परम ऐश्वर्य होना, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

इन्द्रो = परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)।

इन्दुभिः = इन्दुओं द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)॥

इमम् = इसको (सर्वनाम)।

इमा = यह (सर्वनाम)।

इमाः = ये (सर्वनाम)।

इमाम् = इसको (सर्वनाम)।

इमे = यह, ये (सर्वनाम)।

इयम् = यह, इसको (सर्वनाम)।

इव = के समान, की भाँति (अव्यय)।

इषे = प्रगति, इच्छा, निरन्तर दर्शन के लिए (इष् = गति करना, इच्छा करना, निरन्तर देखना)।

इष्टम् = इष्ट को, इच्छा, प्रगति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि को (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)।

इह = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)।

इह = **इह** = यहाँ (सर्वनाम)।

ई

ईडे = स्तुति करता हूँ (ईड् = स्तुति करना)।

ईड्यो = स्तुत्य, स्तुति करने योग्य (ईड - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

ईम् = के समान, इस प्रकार (अव्यय)।

ईशत = ऐश्वर्य हो, अधिकार हो (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशा = ईश्वर द्वारा (ईश् - ऐश्वर्य होना, शासन होना, अधिकार होना)।

ईशानो = अधिकार करने वाला, शासन करने वाला (ईश - ऐश्वर्य-अधिकार होना)।

ईशे = शासन करता है (ईश - शासन करना, अधिकार होना)।

ऋ

ऋचः = ऋचायें, ऋग्वेद के मन्त्र (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, चमकना, आच्छादित करना)।

ऋचम् = ऋचा को, ऋक् वेद को (ऋच - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आच्छादित करना, चमकना)।

ऋतस्य = ऋत के (ऋ-ऋत - गति करना, सञ्चालित करना)।

ऋते = विना (अव्यय)।

ऋत्विजम् = ऋत्विज, ऋत-सञ्चालक, ऋतज्ञ को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, जन्- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

ऋषयः = ऋषिगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

ऋषिभिः = ऋषियों द्वारा (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)।

उ

उ = ही (अव्यय)।

उक्तिम् = उक्ति को, कथन को (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)।

उग्रा = उग्र (उग्र - उग्र होना, तेज होना, तीव्र होना, तीक्ष्ण होना)।

उच्येते = कहे जाते हैं (उच्-वद् - कहना, बोलना)।

उत = ही, भी, उसी प्रकार (अव्यय, निपात)।

उत् = चरत् = उच्चरण करे, उच्चगति करे (उत् - ऊपर, उच्-कहना, समझाना, चर् - जाना, खाना, आचरण करना)।

उदभराम् = भरते हैं, निकालते हैं (उत् - उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च। अ - भूतकालिक क्रिया प्रत्यय। भृ - पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

उदाजत् = उठ़ाया, ऊपर लाया, उत्कृष्टता से चलाया (उत् - उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (उपसर्ग)। आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। अज् - जाना, चलना, स्थापन करना, फेकना)।

उदितो = उदय हुआ (उत्-अय, उत् - ऊपर, उत्कृष्ट, इ - जाना, जानना, पाना)।

उद्गीथो = उदगीथ, उत्कृष्ट गायन (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, गा-गै = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

उद्-धृत्य = उद्-धृत कर (उत् - ऊपर, धृ - रहना, स्थिर रहना, धारण करना, पास रखना, युक्त होना)।

उप = समीप (उपसर्ग)।

उपजीवा = उपजीव (उप - समीप (उपसर्ग), जीव् - जीवन होना,

प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

उपबर्हणम् = उपबर्हण, ब्रह्म के निकट (उप - समीप, बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, रण करना)।

उपसदः = उपसद, सत्य, नित्य, विद्वान्, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य (उप - समीप, सत् - होना, सतत होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, सद् - बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

उपहूतो = समीप बुलाया गया, आह्वान किया गया (उप - समीप, हु - देना, दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - बुलाना, आह्वान करना)।

उपासते = उपासना करते है (उप - समीप, निकट, अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)।

उपैमि = जाता हूँ (उप - निकट (उपसर्ग)। इ - जाना)।

उभयम् = दोनों को (सर्वनाम)।

उभया = दोनों, पूर्णताओं द्वारा (उभय - दोनो (सर्वनाम), उभ् - पूर्ण करना, भरना)।

उभयादतः = उभयभक्षी, दोनो को खाने वाले (उभय - दोनो, अद् - खाना, खिलाना, नष्ट करना)।

उभयेषु = दोनों में, पूर्णताओं में (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)।

उभे = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)।

उरु = बहुत, विस्तृत (अव्यय, सर्वनाम)।

उरुक्रमः = उरुक्रम (उरु - बहुत (अव्यय), क्रम - चलना, रक्षा करना, बढ़ना)॥

उरुष्यतम् = गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार योग्य को (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् - विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)।

ऊरू = शब्द, ध्वनि, विश्वास (ऊ - शब्द करना, ध्वनि करना, विश्वास करना),

उशतीः = उशती (उश - इच्छा करना, चाहना)।

उषसम् = उषा को, प्रभात को (उषस् - प्रभात होना)।

उष्णिहा = उष्णिक्, उष्ण (उष् - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)।

ऊ

ऊ = ही (अव्यय)।

ऊतये = रक्षा के लिए, शब्द के लिए (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊतिभिः = रक्षाओं, वाणियों द्वारा (ऊ - पालन, रक्षण, शब्द करना। अव् - रक्षा-पालन करना)।

ऊती = शब्द करने वाला, रक्षा करने वाला (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)।

ऊत्या = वाणी द्वारा (ऊ - शब्द करना, ध्वनि करना)।

ऊर्जे = ऊर्जा के लिए (ऊर्ज् - बल होना, प्राण होना, प्राणवान् करना)।

ऊर्ध्व = ऊपर, उच्च अवस्था (सर्वनाम)

ऊर्ध्वम् = ऊपर (सर्वनाम),

ऊर्ध्वो = उच्च, ऊपर, ऊर्ध्व (सर्वनाम)।

ए

एक = एक (संख्या)।

एकः = एक (संख्या)।

एकनीडम् = एक आश्रय वाला (एक - एक (संख्या, सर्वनाम), एक - विचार करना, निड् - निवास करना, गृह बनाना)।

एकत्वम् = एकत्व को, एकता को (एक - संख्या)।

एकम् = एक (संख्या, सर्वनाम)।

एजति = चलता है, प्रकाशित होता है (एज् - चलना, कम्पन करना, प्रकाशित होना, चमकना, झलकना)।

एतत् = यह (सर्वनाम)।

एतानि = ये (सर्वनाम)।

एतावान् = यह, इतना (सर्वनाम)।

एति = प्राप्त होता है, जाता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई - जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना)।

एधिः = बढ़ाये, प्रदान करें (एध - बढ़ना)।

एनम् = इसको, इसे (सर्वनाम)।

एनो = यह, इनको, दोष, पाप, प्रकाश (एनो - यह, इनको (सर्वनाम)। एन -इन - दोष होना, पाप होना, प्रकाशित करना, मिलाना,)।

एनो = यह, (सर्वनाम)।

एभिः = इनके द्वारा (सर्वनाम)।

एमसि = प्रेरित करते हो, आते हो (आ-इमसि।आ-इ - आना, आ - समन्तात्, सम्यक्, भलीभाँति, इ - जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना)।।

एव = ही (अव्यय)।

एवम् = इस प्रकार, इस भाँति (सर्वनाम)।

एषाम् = इनका (सर्वनाम)।

एषो = यह (सर्वनाम)।

एहि = आओ, जानो (**आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण। इ = जाना, जानना, पाना)।

ऐ

ऐक्षेताम् = देखें (ईक्ष् - देखना)।

ऐत् = प्राप्त है (**आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)।इ - जाना, जानना, पाना)।

ऐरयन्त = प्राप्त होते हैं (ऋ-इर्य - जाना, चलना, पाना, जानना,

फैलाना, ईर - जाना,जानना, पाना, प्रेरणा करना)।।

ओ

ओजः = ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीना, बढ़ना)।

ओजायमानम् = ओजायमान को (ओज् - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।

ओजो = ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवन होना, बढ़ना)।

ओतः = ओत, सम्यक् ही (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः उत - ही)।

ओतम् = ओत- प्रोत, स्थित, व्याप्त)।

ओ3म् = परमात्मा (अव्यय)।

ओषधयः = ओषधयाँ (उषध् = जानना, रोगमुक्त करना, चिकित्सा करना)।

ओषधीः = ओषधी (उषध् - चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

ओषधे = ओषधे (उषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)।

क

कः = कौन (सर्वनाम)।

ककुप् = ककुप्, गर्वित, चञ्चल, प्यासा (कक् - गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना)।

ककुहासो = गर्व को छोड़ने वाले, विद्वान्, वाणी, विद्या का हास, प्रसन्नता (कक - गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना, कुह - उगना, आश्चर्य या चमत्कार दिखाना, मोहित करना, कु - शब्द करना, कविता करना, हा - छोड़ना, परित्याग करना, जाना, चलना, हस - हंसना, ठट्ठा करना)।

कतिधा = कितने प्रकार से (सर्वनाम)।

कनिक्रदत् = व्याप्त हों, प्रकाश करें, गतिमान् हों (कन - प्रकाशित होना, जाना, व्याप्त होना, कृ - करना)।

कया = किसके द्वारा (सर्वनाम)।

करते = करता है (कृ - करना)।

करिष्यसि = करोगे, करते हैं (कृ - करना)।

कर्णेभिः = कर्णों द्वारा (कर्ण - सुनना, दूर ले जाना, त्याग करना, भेदना, छेदन करना)।

कर्म = कर्म या कार्य (कृ - करना)।

कर्मणे = कर्म के लिए (कृ - करना)।

कर्मभिः = कर्मों द्वारा (कृ = करना)।

कर्माणि = कर्मों को, कर्म (कृ - करना)।

कविः = ज्ञानी (कु - शब्द करना, कविता करना)।

कविक्रतुः = शब्द करने वाले (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना, कृ - करना)।

कस्मै = किसलिए, किसके लिए (सर्वनाम)।

कस्य स्वित् = किसी के (सर्वनाम)।

कामधुक्षः = कामनाओं को जीवन देने वाला, प्रकाशित करने वाला (काम = कामनाएँ, धुक्ष = दीप्त करना, जीवन होना)।।

कामये = कामना करते हैं, चाहते हैं (कम - चाहना, इच्छा करना)।

कामाः = कामनाएँ (कम् - कामना करना, इच्छा करना, चाहना)।

कामाय = कामना के लिए (काम्-कम् - इच्छा करना, चाहना)।

कामो = कामना, इच्छा (कम् - चाहना, इच्छा करना)।

किञ्चन = कोई (किम् + चन (अव्यय)।

किम् = क्या, क्यों, किसलिए (सर्वनाम)।

किम् च = कुछ भी (अव्यय)।

किम् चन कुछ भी (अव्यय)।

किल = निश्चय ही (सर्वनाम)।

कीरेः करने वाला (कृ - करना)।

कीर्तिम् = कीर्ति (कीर्त - नाम लेना)।

कृणुहि = करो (कृ - करना)।

कृण्महे = करते हैं (कृ - करना)।

कृण्वन्ति = करते है (कृ - करना)।

कृतः = किये (कृ - करना)।

कृतम् = कृतित्व, किया हुआ (कृ - करना)।

कृताः = किये (कृ - करना)।

कृतानि = किया गया (कृ- करना)।

कृधि = करो (कृ = करना)।

कृशस्य = कृश का (कृश - कृश होना, सूक्ष्म होना, दुर्बल होना)।

कुचरो = कुचर, दुष्ट आचरण वाले (कु - अनुचित, बुरा, चर - चलना, आचरण करना, कुच् - आकुञ्चन होना, लपेटना, स्वच्छ करना, लिखना, चुराना)।

कुरु = करो (कृ - करना)।

कुर्वन् = करता हुआ (कृ - करना)।

कुवित् = कवि, शब्दज्ञ, शब्दज्ञानी, शब्द को जानने वाला (कु, कव् - शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)।

कुह = कहाँ (सर्वनाम)।

के = कौन, कोई (सर्वनाम)।

केतपूः = गृह, ज्ञान को पवित्र करने वाला (कित् - निवास करना, रोग निवारण करना, केत - सम्मुख वार्ता करना, आमन्त्रण करना)।

केतम् = केत को (कित् - निवास करना, रोग निवारण करना, केत - सम्मुख वार्ता करना, आमन्त्रण करना)।

को = कौन (सर्वनाम)।

कोशात् = कोश से (कुश् - आलिंगन करना, लपेटना, कोश होना, समाधान करना, सहना)।

कौ = क्या (सर्वनाम)।

क्रतुना = कृतित्व द्वारा (कृ-करना)।

क्रतो = कर्मशील (कृ - करना)।

क्रन्दसी = क्रन्दनयुक्त (क्रन्द् - रोना, पुकारना, दुःख होना)।

क्रियते = किया जाता है (कृ - करना)।

क्लिबे = कोमल (क्लीब - कोमल होना)।

क्लीबम् कोमल, निर्बल को (क्लीब् - कोमल, निर्बल होना)।

क्ष

क्षत्राय = क्षत्र के लिए, गति के लिए, शब्द के लिए, भोजन, आच्छादन, मारने के लिए (क्षत्-क्षद् - खाना, ढकना, मारना, रक्षा करना, क्षु - जाना, चलना, शब्द करना)।

क्षयाय = निवास के लिए (क्षि - जाना, चलना, निवास करना, रहना)।

क्षियन्तम् = निवास करने वाले को, क्षति करने वाले को (क्षि-जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)।

क्षेत्रस्य = क्षेत्र का (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, क्षय होना)।

ख

खम् = सर्वव्यापी (अव्यय)।

ग

गच्छति = जाता है (गम्, गच्छ् = जाना)।।

गच्छध्वम् = जायें (गम्-गच्छ् - जाना)।

गच्छन्ति = जाते हैं (गम्-गच्छ् - जाना, जानना, पाना)।

गन्धर्वः = प्रगति, विद्या को धारण करने वाला (गम् + धृ, गम् - जाना, जानना, पाना, धृ - धारण करना)।

गन्धर्वो = गन्धर्व, प्रगतिशील, शोभित (गम् + धृ, गम् - जाना, जानना, पाना, धृ - धारण करना, गन्ध् - गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)।

गमम् = जाने वाला (गम् - जाना)।

गमाम = जायें (गम् - जाना)।

गमेमहि = जाते हैं (गम् - जाना, जानना, पाना)।

गर्भम् = गर्भ को (गृह्-गृभ्-गर्भ् - ग्रहण करना, लेना, अन्तःवास करना, गृ - सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना)।

गर्भे = गर्भ में (ग्रह-गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)।

गविष्टौ = गविष्ट युगल, वाणी, ज्ञान, इच्छा युक्त युगल (गु - शब्द करना, मनन करना)।

गाः = गान, गायक (गा - स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)।

गायत्री = गायत्री, गान, स्तुति (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)।

गावो = प्रगतिशील, मननशील, शब्दकर्ता वचन (गा - स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गिरः = वाणियाँ, बोध, सिञ्चन (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरा = स्तुतियां, वाणियाँ (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)।

गिरिष्ठाः = गिरि पर स्थित, अत्यन्त गिरि, वाणियों में स्थित (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना, स्थ - स्थित होना)।

गिर्वाहसम् = वाणी का वहन करने वाले (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना। गृ - शब्द करना। वह् - वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

गृणानो = वाणी, बोध, अभिसिंचन करने वाले (गृ-गृण् = शब्द करना, सिञ्चन करना, घर्षण करना, जानना, समझना)।

गृधः = इच्छा करो, लालच करो (गृध् - चाहना, इच्छा करना, लालच करना)।

गुहा गुह्य, गुहा (गुह् - आच्छादन करना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)।

गोः = शब्द करने वाला, मननशील (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)।

गोपतौ = सुरक्षा में (गुप् = रक्षा करना। पत् - ऐश्वर्य होना)।

गोपाम् = रक्षा करने वालों के (गुप् = रक्षा करना)।

ग्रामा = ग्राम (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना)।

ग्राम्याः =ग्राम्य, ग्रामीण (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना)

ग्रीष्म = ग्रीष्मकाल, ग्रसने वाला (ग्रस - ग्रसना, घेरना, लेना, ग्रहण करना, खाना, भक्षण करना, ग्रीष् - तपना, ऊष्म होना)।

ग्रीष्मः = ग्रीष्म (ग्रीष् - तपना, ऊष्म होना)।

घ

घर्मो = अभिसिंचित तथा प्रकाशित करने वाले (घृ = सींचना, प्रकाशित होना)।

घृतम् = घृत को, प्रकाश को (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाशित होना)।

घृतयोने = हे घृतयोनि, प्रकाश युक्त (घृ - सींचना, प्रकाशित होना)।

घोरम् = घोर को (घुर् = भयंकर होना, चमकना, घोर् = चतुराई से चलना)।

च

च = और (अव्यय)।

चक्षसे = देखने के लिए (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षु = आँख (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षुः = चक्षु, दृष्टा, वक्ता, आँख (चक्ष- स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्षुषा = दृष्टि से, स्पष्ट वाणी से (चक्ष् - देखना, स्पष्ट कहना)।

चक्षुषो = चक्षुओं का (चक्ष् - देखना, स्पष्ट कहना)।

चक्षोः = चक्षु अर्थात् नेत्रों से (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)।

चक्रे = किया (कृ - करना)।

चचक्षिरे = देखते हैं, कहते हैं (चक्ष - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)॥

चतुष्पदः = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)।

चतुष्पदाः = चार पद वाले (चतुः - चार (संख्या, सर्वनाम), पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना, भूषित होना)।

चतुष्पदे = चार पैर वाले के लिए (चतुः - चार, पद - स्थानान्तर करना)॥

चत्वरिंश्याम् = चालीसवें में (संख्या)।

चन्द्रमा = चन्द्रमा (चन्द् - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

चन्द्रमाः = चन्द्रमा (चन्द् - चमकना, आनन्द होना, आनन्द करना)

चन्द्राः = चन्द्रमा, आनन्द, प्रकाश दायक (चन्द् - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)।

चरिष्यामि = चलूँगा, आचरण करूँगा (चर् = चलना, विचरना, आचरण करना)।

चरेम = आचरण करें (चर - जाना, खाना, आचरण करना)

चित् = भी, ही (अव्यय)।

चित् = चेतन (चित् - चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

चित्तम् = चित्त या चेतना, ज्ञान (चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)।

चित्र = अद्भुत, आश्चर्यजनक, विचित्र, चित्र, रूपाकार (चित् - चेतन होना। चित्र - चित्र बनाना, आश्चर्य करना, आश्चर्य से देखना)।

चित्र-श्रवस्तमः = आश्चर्य-जनक अत्यन्त विश्रुत, महान् विद्वान् (चित्र

= चित्र बनाना, आश्चर्य करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

चित्रस्य = चेतन करने वाले, चित्र स्वरूप का, आश्चर्यस्वरूप का (चित् - चेतन करना या होना, विचार करना, चित्र - चित्र बनाना, आश्चर्य करना)।

चिद् = भी, ही (अव्यय)।

चिद् = चेतन को (चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)।

चिन्वन्तु = चुनें, एकत्र करें (चि - चुनना, एकत्र करना)।

चेतो = चेतन करने वाला, सचेत करने वाला (चित् - चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना)।

चोदयन्ताम् = प्रेरित करें (चुद् - प्रेरणा देना)।

चोदयात् = प्रेरणा दे (चुद् - प्रेरणा देना)।

चोदिता = प्रेरित करने वाला, प्रेरणा-दाता (चुद् - प्रेरणा करना, पूछना, प्रश्न करना, प्रार्थना करना)।

च्यवना = समर्थ, हँसने वाला, तैरने वाला, पार कराने वाला, विद्वान् (च्यु - हँसना, सहना, समर्थ होना, सहन करना, तैरना, गिरना, भटकना, जाना, जानना, पाना)

छ

छन्दांसि = छन्द (छन्द - बल-प्राण होना, आच्छादन करना)।

छाया = छाया (छा-छो - छाया करना, काटना, छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना, बलवान् करना)।

छिद्रम् = छिद्र (छिद्र - छेद करना)।

ज

जगत् = गतिशील (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगतो = जगत् का, संसार का, गतिशील का (जग् - गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगत्याम् = जगत् में, संसार में (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जगन्था = गतिशील (जग् - गति करना, लेना, घर्षण करना)।

जघान = मार दिया, हनन किया (हन्-घ्न - मारना, हिंसा करना)।

जङ्घनत् = हनन किया, मार दिया (हन्-वध् - वध करना, मारना, चलना, गति करना, हिंसा करना)

जजान = उत्पन्न किया (जन - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, प्रकट होना)।

जज्ञिरे = उत्पन्न हुए (जन् - उत्पन्न होना)।

जनयथा = उत्पन्न करे (जन् = उत्पन्न करना)।

जनयन्तीः = उत्पन्न करने वाले (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनाः = जन, लोग (जन् - उत्पन्न होना, प्रकट होना)।

जनाय = जन के लिए (जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)॥

जनासः = लोगों (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)

जनासो जन, लोग (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनिता = उत्पन्न करने वाला (जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जनिष्यमाणः = (भविष्य में) जन्म लेने वाला (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

जने = जन में (जन - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

जरितारम् = जरितृ, जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व को (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

जरितृणाम् = जरितृ, वृद्ध, परिपक्व जनों के (जृ - वृद्ध होना, वृद्धि करना, बढ़ना, जीर्ण होना)।

जविष्ठम् = अतिशय वेगवान् (जु - जाना, वेग से जाना, दौड़ना,

भागना)।

जवीयो = अधिक वेगवान् (जु - जाना, शीघ्रता से चलना, भागना)।

जाग्रतो = जागा हुआ, जाग्रत (जागृ - जगना, नींद न लेना)।

जात = उत्पन्न हुआ (जन् - उत्पन्न होना)।

जातः = उत्पन्न किया, जाना, शब्द किया (जन् - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना, जण् - जानना, शब्द करना)।

जातम् = उत्पन्न हुआ (जन् - उत्पन्न होना)।

जाता = उत्पन्न हुए (जन् - उत्पन्न होना)।

जातानि = उत्पन्न (जन् - उत्पन्न करना)।

जातो = उत्पन्न (जन् - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना)।

जानतः = जानता है (ज्ञा-जान - जानना)।

जानताम् = जानो (ज्ञा-जा - जानना, समझना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

जानाना = जानते हुए (ज्ञा-जा - जानना, समझना)।

जिगीवान् = स्तुति करने वाले ने (गा-जिगा- स्तुति करना, प्रशंसा करना)

जिजीविषेत् = जीवन की इच्छा करें (जीव् - प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जिन्वथ = प्रीति करो (जिन्व् - प्रीति करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)।

जीवला = जीवला (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवा = जीव (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीवेम = जीवित रहें (जीव् - प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जीव्यासम् = जीवन्त रहें, जीवन पायें, जीवित रहें (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)।

जुषामहे = विचार करते हैं, सेवा करते हैं (जुष् = विचार करना, सेवा करना)।

जुहुमः = देते हैं, समर्पित करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना)।

जुहुराणम् = कुटिलता को (ह्वृ - कुटिल होना, निवास करना, आच्छादन करना)।

जुहोमि = दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना)।

ज्यया = ज्या, वृद्ध, जयी द्वारा (ज्या - वृद्ध होना, बड़ा होना, बर्द्धित होना, जि - जय होना, जीतना)।

ज्यायान् = अधिक, ज्येष्ठ, वर्धित, बड़ा (ज्या - ज्येष्ठ होना, बड़ा होना, बढ़ना, वृद्ध होना)।

ज्योक् = चिरम्, सदा (अव्यय)।

ज्योतिः = प्रकाश (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतिषाम् = ज्योतियो का (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

ज्योतींषि = ज्योतियों को (ज्युत् - प्रकाशित होना, चमकना)।

ण

णः (नः) = हमारा, हमारे लिए, हमको (सर्वनाम)।

त

तत् = वह, उस को (सर्वनाम)।

ततः = उससे, इसलिए (सर्वनाम)।

ततो = अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)।

तत्र = वहाँ (सर्वनाम)।

तथा = उसी प्रकार (अव्यय)।

तनच्मि = शब्द, विस्तार करता हूँ (तन् - शब्द करना, विस्तार करना)।

तनु = विस्तार करो (तन् - विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

तनूः = विस्तार (तन् - विस्तार करना, फैलाना, बढ़ाना)।

तनूभिः = तनुओं द्वारा, विस्तार द्वारा, वाणी द्वारा (तन् - विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

तन्तवो = तन्तु, विस्तार (तन् - विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, विश्वास करना, आश्रय देना, पालन करना)।

तन्वाना = विस्तृत करते हुए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)।

तन्वो = विस्तार, वृद्धि (तन् - विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, विश्वास करना, आश्रय देना)।

तपः = तप (तप् = तप करना)।

तपतु = तपे (तप - तप्त होना, तप्त करना, जलन होना)।

तपन्तु = तपायें (तप - तप्त होना, तप्त करना, मन से या शरीर में जलना)।

तपसा = तप द्वारा (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)।

तपसे = तप के लिए (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)।

तपस्पतिः = तपपति (तप् = तप्त होना, तप करना, ऐश्वर्य होना, पत् = ऐश्वर्य होना, जाना, जानना)॥

तमः = इच्छा, दुःख, अन्धकार (तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, दुःखित होना)।

तमसा = इच्छा द्वारा, दुःख द्वारा, अन्धकार द्वारा (तम् - इच्छा करना, चाहना, दुःखित होना, अन्धकार होना)।

तमसे = तमस् के लिए (तम् - इच्छा होना अन्धकर होना)।

तम् = उसे (सर्वनाम)।

तमः = इच्छा, दुःख, अन्धकार (तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, दुःखित होना)।

तमो = इच्छा, दुःख, अन्धकार (तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, दुःखित होना)।

तव = तुम्हारा (सर्वनाम)।

तस्करम् = तस्कर को (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, भेजना, उड़ाना)।

तस्तभाने = स्तभित अथवा प्रकाशित करने वाले (स्तभ्-स्तभि-स्तम्भ - स्थापित करना, स्थित करना)।

तस्मा = उससे (सर्वनाम)।

तस्मात् = उस, उससे (सर्वनाम)।

तस्मिन् = उसमें (सर्वनाम)।

तस्मै = उसके लिए (सर्वनाम)।

तस्य = उसका (सर्वनाम)।

ता = वे (सर्वनाम)।

ताढि = ताड़ना दो, प्रकाश दो, कहो, बोलो (तड् - मारना, ताड़न करना, तड - चमकना, चमकाना, बोलना)।

तानि = उन को, वे (सर्वनाम)।

तान् = उनको (सर्वनाम)।

ताभ्याम् = उन दोनो के लिए (सर्वनाम)।

ताम् = उसको (सर्वनाम)।

तायते = विस्तार होता है (ताय् - संरक्षण करना, फैलाना, लम्बा करना)।

तार्क्ष्यो = गमनीय, गम्य, प्राप्य, पाने योग्य, विद्वान् (तृक्ष् - चलना, जाना, जानना, पाना)।

तिग्मम् = गति, ज्ञान, प्राप्ति, कौटिल्य को, कुटिलता को, कूटचाल को (तिग् - जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना)।

तिर = पार करो (तृ - तैरना, पार जाना, पार करना)।

तिरश्चये = तिरछा, तिर्यक् (अव्यय)।

तिर्यञ्चः = तिरछा, तिर्यक् (अव्यय)॥

तिष्ठत् = ठहरा (तिष्ठ् - ठहरना)।

तिष्ठति = स्थित है (तिष्ठ् - ठहरना, खड़ा होना)।

तिष्ठसि = स्थित हो, ठहरे हो, खड़े हो (तिष्ठ् - ठहरना, स्थित होना, खड़ा होना)।

तीर्त्वा = तैर कर, पार करके (तृ - तैरना, पार करना, तीर - पूर्ण करना, पार लगाना)।

तृण्णम् = हिंसित, घातक (तृह् - हिंसा करना। तृण् - घास चरना, खाना, शब्द करना, अंकुरित होना)।

तृतीये = तीसरे (संख्या)।

तु = तो (अव्यय, निपात)।

तुविष्मान् = प्रगतिशील, वृद्धिशील (तु - जाना, वृद्धि करना, बढ़ना, पूर्ण करना, दुःख देना, मार डालना)।

तुष्टुवांसः = तृप्त करने वाले, सन्तुष्ट करने वाले (तुष् = सन्तुष्ट होना, तृप्त होना, तृप्त करना, प्रीति करना)।

ते = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)।

तेतिजानः = तेतिजान, तीक्ष्ण (तिज्, तेज् - चमकना, चमकाना, पैना करना)।

तेन = उसके द्वारा (सर्वनाम)।

तेषाम् = उनका (सर्वनाम)।

त्यक्तेन = त्याग किये द्वारा, त्यागमय, त्यागभाव के साथ (त्यज-छोड़ना, त्यागना, देना, दान करना)।

त्र

त्रायस्व = रक्षा करो (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)।

त्रिपदा = तीन पद वाले (त्रि - तीन, (संख्या, सर्वनाम), पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना, भूषित होना)।

त्रिपात् = तीन पाद (त्रि - तीन, पद् - चलना, भूषित होना)।

त्रिपाद् = तीन पाद (त्रि - तीन, पद् - चलना, भूषित होना)।

त्रिः सप्त = तीन और सात (त्रि - तीन, सप्त - सात (संख्या)। सप्त - समूह बनाना, मिलना, एकत्र होना)।

त्रिषप्ताः = त्रि-सप्त (त्रि - तीन (संख्या), सप्त - सात (संख्या), सप् - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, समूह होना, मिलाप होना)।

त्रिष्टुप् = त्रिष्टुप्, स्तुति (त्रै - संरक्षण करना, पोषण करना, त्रि - तीन, (संख्या), स्तु - स्तुति करना)।

त्रीणि = तीन (त्रि - तीन, संख्या)।

त्वचि = त्वचा में (त्वच - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)।

त्वत् = तुमसे (सर्वनाम)।

त्वम् = तुम (सर्वनाम)।

त्वयि = तुम में (सर्वनाम)।

त्वा = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)।

त्वाम् = तुमको (सर्वनाम)।

द

दक्षम् = दक्ष को (दक्ष् - चतुर होना, दक्ष होना, बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)।

दत्वा = देकर (दा - दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

ददे = दिया, दान किया (दा, दद्, दत् - दान करना, देना, त्याग

करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दधथो = धारण करो (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधातन = धारण करे, प्रदान करे (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधाति = प्रदान करता है, धारण करता है (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधातु = धारण करे, प्रदान करे, पालन करे, रक्षा करे (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधानाः = धारण करने वाले (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दधानान् = धारण करने वाला (धा-धारण करना)।

दध्म = धारण करते हैं, धरते हैं, अर्पण करते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

दमे = सन्धि करते हैं (दम् = सन्धि करना, उपशमन करना, शान्त करना, दमन करना, जीतना, स्वाधीन करना)॥

दर्दर्षि = दृढ़ करते हो (दृद् = दृढ़ करना, दृढ़ होना, धारण करना, सहन करना, समर्थ होना)।

दशाङ्गुलम् = दश अंगुल (दश - दस (संख्या), अङ्ग - चलना, अंकुरित होना, अंग होना, अवयव होना)।

दस्योः = दस्यु का, डसने, नष्ट करने वाले का (दस् - नष्ट होना, नष्ट करना, डसना, रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना)।

दस्रा = नष्ट करने वाले, पालन करने वाले (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)।

दाधार = धारण किया, स्थापित किया (धृ - धारण करना)।

दानुम् = काटने वाले को, दानी को (दा - काटना, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

दान्ति = देते हैं, दान करते हैं (दा - देना, सौंपना)।

दाशुषे = दानी के लिए (दश् - देना)।

दासम् = दास को, दानी को, सेवाधर्मी को, सेवाभावी को (दास् - दान करना, सेवा करना, काटना)।

दिवम् = दिव को, तेजस्वी को (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दिवि = दिव में, दिव्य स्वरूप में (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, स्तुति करना, प्रीति करना)॥

दिवे-दिवे = प्रतिदिन (अव्यय)।

दिवो = दिव, स्तुतिकर्ता, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

दिव्यो = दिव्य (दिव् - तेजस्वी होना)।

दिशः = दिशा (दिश् - दिखाना, समझाना, देना)।

दीक्षापतिः = दीक्षापति (दीक्ष - दीक्षा देना, उपदेश देना, पत् = ऐश्वर्य होना, जाना, जानना, पाना, उड़ना, नीचे गति करना)।

दीक्षाम् = दीक्षा को (दीक्ष - दीक्षा देना, उपदेश देना, आदेश देना, नियम-व्रत करना)।

दीदिवम् = प्रकाश करने वाले (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, स्तुति करना)।

दृते = आदरणीय (दृ - आदर करना)।

दृढा = दृढ़ (दृढ-दृद - धारण करना, सहन करना, दृढ होना)।

दृशे = देखने के लिए, दृष्टि में (दृश्-पश्य - देखना)॥

दृंह = दृढ़ करो, बढ़ाओ (दृंह् - बढ़ना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)।

दृंहस्व = दृढ़ करो, वृद्धि करो (दृंह = दृढ़ करना, वृद्धि करना)।

दुध्र = दोहन, जाना, शीघ्रता से जाना (द्रु - जाना, शीघ्रता से जाना, चलना, बहना, प्रवाहित होना)।

दुरितानि = दोषों को, दुःखों को, दुष्ट आचरण को (दुः, दुष्, दुर् - दूषित होना, दुष्ट आचरण करना)।

दुर्मित्रियाः = दुर्मित्र, दुष्ट मित्र (दुः, दुष्, दुर् - दूषित होना, दुष्ट आचरण करना। मिद् - प्रीति करना, मृदुल होना)।

दूतम् = प्रगतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखी, पीड़ित (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)।

दूरम् = दूर (अव्यय, सर्वनाम)।

दूरे = दूर (अव्यय)।

देव = देव, तेजस्वी, दिव्य (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवः = देव ने (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवजनाः = देवजन (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, जन् - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

देवता = देवत्व, दिव्यता (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवम् = देव को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देव-यज्ञायै = देवयजन के लिए (देव्, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, यज - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

देवयन्तः = देव-गामी, देवों का उद्धार करते हुए (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यन् - उद्धार करना, या - जाना, जानना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

देवस्य = देव का (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना)।

देवहितम् = देवहित को (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, हि - गति करना, चलना, जाना, जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)।

देवा = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवाः = देवगण (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)।

देवान् = देवों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवानाम् = देवों का (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवाय = देव के लिए (दिव् - तेजस्वी होना)।

देवाय = देव के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवीः = दिव्यगुणयुक्त (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)।

देवेन = देवों द्वारा, देवों के साथ, तेजस्वी, विद्वान् के साथ (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवेभिः = देवों द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवेषु = देवों में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

देवो = देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति

करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

दैवम् = दैव, देव (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना)।

दोषावस्तः = प्रातः तथा सायम् अथवा दिन तथा रात्रि में (अव्यय)।

दौ = दो (संख्या)।

द्य

द्याम् = द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय, प्रकाशमान को (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

द्यावा = द्यावा, अग्रगामी, प्रकाशमय (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

द्यावः = अग्रगामी, प्रकाशमय, द्यावा (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

द्यौ = अग्रगामी (द्यु = आगे जाना)।

द्यौः = प्रकाशयुक्त, प्रकाशवान्, विद्वान् (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् - प्रकाशित होना)।

द्रविणम् = द्रविण को, द्रवित होने वाले को, द्रवणशील, प्रवाहमान को (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

द्रविणस्युः = प्रवाहकामी (द्रु - जाना, अनुसरण करना),

द्विजानाम् = द्विजों का, दो जन्म वालों का (द्वि - दो (संख्या), जन् - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।

द्विपदा = द्विपद वाले (द्वि - दो (संख्या, सर्वनाम), पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना, भूषित होना)।

द्विपदः = द्विपद वाले (द्वि - दो, संख्या, पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना)।

द्विपदे = द्विपद के लिए (द्वि - दो (संख्या), पद - स्थानान्तर करना)।

द्विषो = द्वेषी का (द्विष् - द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)।

द्विष्मः = द्वेष करते हैं (द्विष् - द्वेष करना)।

द्वेष्टि = द्वेष करता है (द्विष् - द्वेष करना)।

ध

धत्त = धारण, पोषण करो, धारण करता है (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

धनम् = धन को (धन- उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)।

धर्माणि = धर्म (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

धाम = धारण-पोषण-रक्षण, दान (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)।

धामन् = धाम में (धा - धारण करना)।

धामानि = धामों को (धा - धारण करना)।

धाम्ना = धाम द्वारा (धा - धारण करना आदि)।

धावतो = दौड़ते हुए (धाव् - जाना, दौड़ना, भागना, स्वच्छ करना, स्वच्छ होना)।

धिया = धारणा द्वारा, बुद्धि द्वारा (धी - धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि - धारण करना, युक्त होना)।

धियो = धारणा शक्ति, बुद्धि को (धी - धारण करना, आधार होना, अनादर करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि - धारण करना)।

धीमहि = धारण करते हैं, बुद्धिगत करते हैं, (धी - धारण करना, बुद्धि होना)।

धीयताम् = धारण करायें, प्रदान करें (धी - धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना)।

धीराः = धीर, धैर्यवान् (धी - धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना)।

धीराणाम् = धीरों का, धैर्य वालों का (धी = धारण करना, धैर्य होना)।

धृतिः = धैर्य (धृ - रहना, स्थिर रहना, धारण करना, रखना, युक्त होना)।

ध्रुवा = स्थिर, अविचल, गतिशील (ध्रुव् = स्थिर होना, अविचल, गतिशील होना)।

न

न = नहीं, के समान, उपमार्थक (अव्यय)।

नः = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)।

नपाता = न गिराने वाला (न - नहीं, पत् - गिरना)।

नम = नमन (नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)।

नमः = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नमेते = नमन करते हैं (नम - नमन करना, सम्मान देना, नमना)।

नमो = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।

नय = ले जाओ (नी - ले जाना)।

नरे = नर में (नृ - ले जाना)॥

नरो = नर (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नाकः = नाक, अक-हीन, अकुटिल, अविचल (न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क - नाश होना)।

नाकम् = नाक अर्थात् अक हीन, अविचल तथा अकुटिल (न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना)।

नाधमानस्य = याचना करते हुए, नाधमान का, याचक का (नाध - याचना करना, रोगी होना, श्रीमान् होना, आशीर्वाद देना, स्वस्ति-वाचन करना)।

नाना = अनेक, बहुत, विविध (अव्यय)।

नाभिः = नाभि (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा

करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)।

नाभौ = नाभि में, मध्य में (नभ - मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)।

नाभ्याः = नाभि से (नभ् - मध्य होना, केन्द्र होना, हिंसा करना)।

नाम = नाम (अव्यय, सर्वनाम)।

नारकाय = नारक के लिए (नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)।

नार्यः = नारियाँ (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)।

नासत्या = असत्य-हीन युगल, नासत्य युगल, श्वास-प्रश्वास, शब्द योग्य (न - नहीं, अ - नहीं, सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, नास - शब्द करना, ध्वनि करना, श्वास लेना, श्वास-ध्वनि करना)।

नि = निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)।

निः = निरन्तर, निश्चित (अव्यय)।

निचितो = निरन्तर चेतन, निरन्तर चयनित, एकत्र किया गया (नि - निश्चित, निरन्तर, चित् - चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना, चि - चुनना, चयन करना)।

निमिषतो = निमिष से, सिञ्चन, प्रोक्षण से (नि - निश्चित, नितराम्, निरन्तर, मिष् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, घर्षण करना, स्पर्धा करना, विवाद करना, कलह करना, नि-मिष् - पलक झपकाना, आँख बन्द करना)।

निमेषा = निमेष, सिञ्चन, प्रोक्षण (नि - निश्चित, निरन्तर, मिष् - स्पर्धा करना, सींचना, प्रोक्षण करना, पलक झपकाना)।

निवेशनी = निवेशनी, निवेश करने वाली (नि - निश्चित, निरन्तर, विश - प्रवेश करना, घुसना, भीतर जाना, धंसना)।

निष्टप्तम् = दहनशील (नि - निश्चित, निरन्तर, तप् - सन्ताप, दहन ऐश्वर्य होना)।

निष्टप्ता = सन्ताप युक्त, दहनशीलं, ऐश्वर्ययुक्त (नि - निश्चित, निरन्तर, तप् = सन्ताप, दहन ऐश्वर्य होना)।

निहितम् = निहित, स्थित (नि - निरन्तर, निश्चित, हि - जाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

निहिता = स्थित (नि - निरन्तर, निश्चित, हि - जाना)।

नृचक्षसम् = नरों को देखने वाले (नृ - ले जाना, चक्ष - देखना)।

नृम्णस्य = नरत्व की (नृ - ले जाना)।

नु = ही, भी, निश्चय ही, शीघ्र ही (निपात, अव्यय)।

नुदस्व = प्रेरणा करें, भेजें (नुद् - भेजना, प्रेरणा करना, जाना)॥

नू = ही, भी, शीघ्र (निपात, अव्यय)।

नूतनैः = नूतन, नवीन, नये लोगों द्वारा (नु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, निश्चय करना, नूतन होना, नया करना, नवीन करना)।

नेता = ले जाने वाला (नी - ले जाना)।

नेनीयते = ले जाता है (नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मार्ग दिखाना, पाना, मिलना, ले जाना)।

नो (नः) = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)।

नौ = हम दोनों (सर्वनाम)।

प

पङ्क्त्या = पंक्ति द्वारा, विस्तार द्वारा (पञ्च् = व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, विस्तार करना, फैलाना)।

पचते = परिपक्व करता है (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पचन्तम् = पाचन करने वाले को, पकाने वाले को, व्यक्त करने वाले, प्रसिद्ध करने वाले को (पच् - पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)।

पतयः = पति, ऐश्वर्यवान्, स्वामी (पत् - ऐश्वर्य होना)।

पतिः = ऐश्वर्यवान् स्वामी (पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पतिः = ऐश्वर्यवान्, स्वामी (पत् - जाना, नीचे जाना, उड़ना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पते = पति (पत् - जाना, नीचे जाना, उड़ना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पत्नयो = पत्नियाँ (पत् - जाना, नीचे जाना, उड़ना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

पदानि = पद (पद् - चलना)।

पदे = पद में, चलने में, विद्या में (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)।

पद्भ्याम् = पाद, चरण, भूषण के लिए, पैरों के लिए (पद् - चलना, भूषित होना)।

पनाय्यम् = प्रशंसा, स्तुति (पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

पपृक्षे = मिला, सम्बन्धित हुआ (पृक् - मिलना, सम्बन्धित होना)।

परमात् = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम (सर्वनाम)।

परमेण = परम द्वारा (सर्वनाम)।

परस्याः = पर का, अन्य का (सर्वनाम)। **परिभूः =** सब ओर होने वाला (परि - सब ओर, भू- होना)।

परा = परे, दूर (अव्यय)।

परावतः = दूर से (परा - परम, परे, दूर, पीछे, विपरीत (अव्यय)।

परि = सर्वतः, सभी ओर (उपसर्ग)।

परिगृहीतम् = सम्प्राप्त, सब ओर से, ग्रहण किया हुआ (परि - सब ओर से (उपसर्ग), गृह - लेना, स्वीकार करना)।

परि जग्रभत् = परिग्रहण कर सकता है (परि - सब ओर (सर्वनाम)। ग्रह्-ग्रभ् - ग्रहण करना)।

परिधयः = परिधियाँ (परि - सब ओर, धि - धारण करना)।

परिभूः = सब ओर होने वाला (परि - सब ओर, भू- होना)।

परियन्ति = परियमन करते हैं, सभी ओर उद्धार, प्रेरणा, नियन्त्रण,

नियमन, आवरण करते हैं (परि = सभी ओर (उपसर्ग), यम् - प्रेरणा, नियन्त्रण, नियमन, आवरण करना। यन - उद्धार करना)।

परिभूः = सब ओर होने वाला, सर्वत्र विद्यमान (परि = सभी ओर, (उपसर्ग), भू - होना)।

परिष्कन्दा = परिष्कन्द, परिचलन, आनन्द (परि - सब ओर, स्कन्द - चलना, सूखना, कन्द् - आनन्द होना, सन्तोष होना, रोना)।

परे = पर, परम, दूर (पर - पराया, अन्य, परे, पश्चात् (उपसर्ग)। पृ - पूर्ण करना, भरना)।

परेभ्यः = परायों के लिए, अन्यों से (सर्वनाम)।

परो = पराया, परे (अव्यय)।

पर्जन्यो = पर्जन्य, जनों को पूर्ण करने वाले (पृ - पूर्ण करना, भरना, जन् - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना)।

पर्यपश्यत् = परितः, सभी ओर देखता है (परि - सभी ओर (उपसर्ग), पश्-दृश् - देखना)।

पर्वता = पर्वत (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वतान् = पर्वतों को (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पर्वतेषु = पर्वतों में, पर्वतों पर (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।

पवताम् = पवित्र करे (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पवित्रम् = पवित्र (पू - पवित्र करना)।

पविम् = पवित्र, पालन, रक्षा करने वाले को (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पवित्रम् = पवित्र (पू - पवित्र करना)।

पवित्रेण = पवित्रता से (पू - पवित्र करना)।

पशुभ्यः = पशुओं के लिए (दृश्-पश् - देखना। पश् - बांधना, जाना)।

पशुम् = पशु को, दृष्टा को, बन्धन को (पश्-दृश् - देखना, पश् -

बाँधना, जाना)।

पशून् = पशुओं को, सम्यक् दृष्टि को, सम्बन्ध को (पश् = देखना, पश् - बन्धन होना)।

पश्चात् = पीछे (अव्यय)।

पश्यत् = देखता है (पश्-दृश् - देखना)।

पश्यति = देखता है (पश् - देखना)।

पश्येम = देखें (पश्-दृश् - देखना)।

पात्रेण = पात्र, संरक्षण, आवरण द्वारा (पा - रक्षा करना, पालन करना)।

पादा = पाद, चरण, भूषण (पद् - चलना, भूषित होना)।

पादो = पाद (पद् - चलना, भूषित होना)।

पादौ = पैर (पद् - चलना, भूषित होना)।

पाप्मने = पाप्मन् के लिए, पाप के लिए (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)।

पावको = पावक (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पावमानी = पवमान युक्त, पवित्रता युक्त, पवित्र करने वाले, (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)।

पाहि = पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)।

पिता = पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)।

पितुः = पिता का (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)।

पितेव = पिता के समान (पि - जाना, चलना, जानना, पाना, पा - रक्षा करना, पालन करना, इव - के समान)।

पिब = पान करो, पी लो (पिब्-पा - पीना, प्राशन करना)।

पिबध्यै = पीने के लिए (पा-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)

पिबाथः = पियो, पान करो (पा-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पीतये = पान के लिए (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

पृच्छन्ति = पूछते हैं (पृश्-पृच्छ् - पूछना, प्रश्न करना)।

पृथिवि = विस्तार, पृथ्वी पर (पृथ् - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, विस्तार होना)।

पृथिवी = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार (पृथ्, प्रथ् - विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथिवीम् = पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् - विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथिव्या = पृथ्वी योग्य, पृथिवी द्वारा पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् - विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथिव्याः = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् - विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)।

पृथुज्रयम् = विस्तृत गति वाले, जीतने वाले (पृथ्, प्रथ् - विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना, ज्रि - जीतना, जय पाना, न्यून होना, वृद्ध होना, जीर्ण होना)।

पृषद् = पृषद् (पृष् - जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना)।

पुनः = फिर (अव्यय)।

पुनातु = पवित्र करो (पू - पवित्र करना)।

पुरः = पुर, पूर्ति, पूर्ण, भरण (पुर् - अग्रसर होना, मुख्य होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पुरस्तात् = पहले (अव्यय)।

पुरा = पहले (अव्यय)।

पुरुभू = अग्रणी, अग्रभावी, आगे होने वाला (पुर - पूर्व होना, पहले होना,

अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, भु - जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

पुरुतमम् = अत्यन्त अग्रगामी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)।

पुरुवीरम् = पुरुवीर को, अग्रणी वीर को, अग्रगामी पराक्रमी को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

पुरुषः = पुरुष, परिपूर्ण (पुर् - अग्रसर होना, मुख्य होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पुरुषम् = पुरुष को (पुर् - अग्रसर होना, मुख्य होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पुरुषात् = पुरुष से (पुर् - अग्रसर होना, मुख्य होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पुरुषेण = पुरुष के साथ (पुर् - अग्रसर होना, मुख्य होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पुरोहितम् = पुरोहित को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, हि - चलना, जाना, जानना, पाना, वृद्धि करना, प्रेरणा करना)।

पुंश्चलूम् = पुंश्चलू को, प्रगतिशील, पवित्र चाल को (पु - गति करना, रक्षा करना, चलना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, चल् - चलना)।

पुष्करात् = पुष्कर से, पुष्टिकर से (पुष् - पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना, कृ - करना)।

पुष्टानि = पुष्ट किया, पोषित किया (पुष् - पालन- पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पुष्टीः = पुष्टि, पोषण (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)।

पूरुषः = पुरुष, परिपूर्ण (पुर् - अग्रसर होना, मुख्य होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)।

पूर्वम् = पहले ही (सर्वनाम)।

पूर्वे = पूर्व में, पहले (अव्यय)।

पूर्वे = पूर्व, पहले, पूर्ण करने के लिए (पूर्व = पूर्व, पहले, (सर्वनाम), पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)।

पूर्वेभिः = पूर्व, पूर्ण द्वारा (पूर्व - पूर्व, पहले, (सर्वनाम), पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)।

पूर्वो = पूर्व, पहले (सर्वनाम)।

पूर्व्या = पहले, पूर्व (पूर्व - पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)।

पूर्व्याय = पहले, पूर्व के लिए (पूर्व - पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)।

पूषेम = पोषण हो, पोषण करें (पुष् - पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

पोषम् = पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)।

प्र = अधिक (उपसर्ग)।

प्र औक्षन् = सींचते हुए, स्वच्छ करते हुए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक। उक्ष् - सिंचन करना, स्वच्छ करना)।

प्रकुपितान् = प्रकोपित को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, कुप- क्रोध करना, बोलना, चमकना)।

प्रचोदयात् = प्रकृष्ट प्रेरणा दे, प्रेरित करे (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चुद् - प्रेरणा देना)।

प्रजया = प्रजा के साथ (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)।

प्रज्ञानम् = प्रकृष्ट, विशेष ज्ञान (प्र - प्रकृष्ट, ज्ञा - जानना, समझना)।

प्रजानाम् = प्रजाओं के, प्राणियों के ((प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना,

उत्पन्न करना)।

प्रजापतिः = प्रजापति, प्रजा का पालक, रक्षक, स्वामी (प्र - प्रकृष्ट, अधिक। जन् - उत्पन्न करना, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना, रक्षा करना)।

प्रजापते = हे प्रजापति (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)।

प्रजाम् = प्रजा को (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रजाभ्यो = प्रजा के लिए (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रजावतीः = प्रजायुक्त, सन्तान वाली (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। जन् = जन्म होना, जन्म देना, उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रजासु = प्रजाओं में, प्राणियों में (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)।

प्रणिनाय = ले जाता है (नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मिलना, ले जाना)।

प्रति = सम्बन्ध में, विषय में।

प्रति उष्टम् = प्रति-दहनशील (प्रति - प्रतिकार में, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, उष् - दहन, हिंसा करना)।

प्रति उष्टा = प्रति-दहनशील (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, उष् = दहन, हिंसा करना)।

प्रतिमा = प्रतिमा, प्रति-मान, (प्र - प्रकृष्ट, अधिक। मा - मापना, तुलना करना)।

प्रतिमानम् = प्रतिमान (प्रति - सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, मा - मापना, तुलना करना)।

प्रतिष्ठम् = प्रतिष्ठित, स्थित (तिष्ठ-स्था - स्थित होना, ठहरना, मार्ग प्रतीक्षा करना)।

प्रतिष्ठिता = प्रतिष्ठित (प्र - प्रकृष्ट, तिष्ठ-स्था - स्थित होना, ठहरना, मार्ग प्रतीक्षा करना)।

प्रत्यङ् = प्रत्यक्ष, प्रत्येक (अव्यय)।

प्रदिशो = प्रकृष्ट रूपों वाला, प्रकृष्ट, अधिक दिशा देने वाला (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)।

प्रथमानि = प्रथम, पहले या मुख्य (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)

प्रथमो = प्रथम (प्रथ् - विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

प्रदिशि = प्रदिश में, प्रकृष्ठ दिशा-निर्देश में, अनुशासन में (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)।

प्रपद्ये = प्राप्त हो (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, पद - स्थानान्तर करना, प्राप्त होना)।

प्रभूवरीः = अधिक होने वाला, प्रकृष्ट होने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भू - होना)।

प्रविशन्ति = प्रवेश करते हैं (प्र - प्रकृष्ट, विश् - प्रवेश करना, भीतर जाना)।

प्र वोचेत् = कहे, प्रवचन करे (प्र - प्रकृष्ट, वच्-वद् - कहना)।

प्रशिषम् = प्रशिष को, प्रयोजन को, अनुशासन को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)।

प्रहाय्याः = प्रकृष्ट गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)।

प्राञ्चः = प्राञ्च, लम्बे, लम्बाई वाले (सर्वनाम)।

प्राणात् = प्राण से (प्र - प्रकृष्ट, अन् - चेतन होना, प्राण होना)।

प्राणतो = प्राण से (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन्- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्राणापानौ = प्राण- अपान (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन् - जीवन होना, प्राण होना)।

प्राणम् = प्राण को (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन् - जीवन होना, चेतन होना, प्रा - पूर्ण करना, तृप्त करना)।

प्रार्पयतु = बहुत अधिक अर्पण करें (प्र + अर्पयतु, प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। अर्प् = अर्पण करना)।

प्रियम् = प्रिय (प्री - स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)।

प्रियासः = प्रिय (प्री - प्रीति करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, कामना करना)।

प्रेत्य = प्रकृष्ट, अधिक गमन कर, भाग कर (प्र - प्रकृष्ट, इ - जाना)।

प्रेष्ठम् = अत्यन्त प्रिय (प्री - प्रीति करना, प्रेम करना, प्रिय होना)।

ब

बन्धुः = भाई (बन्ध - बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)।

बभूव = हो गया (भू - होना, प्राप्त होना)।

बर्हिषि = वृद्धि में, प्रयास में (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना। बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बर्हिषो = बढ़ा हुआ, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बलदा = बल देने वाला (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना, दा - देना)।

बलस्य = बल का (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

बला = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)।

बह्वीः = बहुत (सर्वनाम)।

बाहू = बाहु, प्रयास, प्रगति (बाह् - प्रयास करना, बह् - गति करना, हिंसा करना)।

बाह्यतः = बाहर (बह् - चलना, गति करना, बाहर होना)।

बिलम् = भेद, आच्छादन, आवरण (बिल् - आच्छादन करना, जाना, छेद करना, भेदना, भेदन करना, भाग करना)।

बिभ्रतः = भरण, धारण करते हुए (भृ - भरना, भरण करना, धारण करना)।

बृहत् = बृहत्, बड़ा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहती = बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहतीः = बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहन्तम् = बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

बृहस्पतिः = विराट, महान्, बृहस्पति, पति, स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना)।

बुध्येम = बोध हो (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)।

ब्रवाणि = बोलें (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रवाम = बोलें (ब्रू - कहना, बोलना)।

ब्रह्म = ब्रह्म, बड़ा, विराट, बृहत्, बृहत्, परमात्मा, वेद (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्मणे = ब्रह्म के लिए, बृहत् के लिए (बृह्-बढ़ना)।

ब्रह्मणो = ब्रह्म का (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)।

ब्रह्मलोकम् = ब्रह्म-लोक को, महान् दर्शन को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, लोक् - देखना, प्रकाशित होना, बोलना)।

ब्रह्म-वर्चसम् = ब्रह्म-वर्चस्, ब्रह्म तेज, (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।

ब्राह्मणम् = ब्राह्मण को, बृहत् को (बृह्-बढ़ना)।

ब्राह्मणो = ब्राह्मण (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना)।

भ

भगवन् = हे भगवन् (भग्-भज् - सेवा करना, देना, दान करना, भजना, भजन करना)।

भगाय = भग के लिए, सेवा, दान के लिए (भज् - सेवा करना, दान करना)।

भद्रम् = सुख, शुभ, कल्याणकारी (भदि-भन्द् - सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)।

भयन्ते = भयभीत होते हैं (भी - भय होना, डर होना, डराना)।

भर = भरण करो, पूर्ण करो (भृ - भरण करना, पूर्ण करना)।

भरन्तः = भरण करते हुए, भरण करने वाले (भृ - पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।

भर्गो = भर्ग, प्रकाश, भरण, पोषण, धारण करने वाला (भृज्-भर्ज - चमकना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना, भूजना, तलना, पकाना। भृ - भरण, पोषण, धारण करना)।

भव = हो (भू = होना)।

भवताम् = हो (भू - होना)।

भवति = होता (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भवतु = हो, हो जाये (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भवन्ति = होते हैं (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भवन्तु = हों, हो जायें (भू - होना)।

भवासि = होते हों (भू - होना)।

भविष्यत् = भविष्य (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

भवेम = प्रगतिशील रहें, संघर्षशील रहें, बने रहें (भु - जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भस्मान्तम् = भस्म (भोजन) से चेतन रहने वाला, अन्त में भस्म हो जाने वाला (भस् - खाना, चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना, अन् - चेतन होना, जीवन होना, प्राण होना, समर्थ होना, जाना, जानना, पाना)।

भागम् = सेवा, दान, भोजन, भाग को (भज् = सेवा करना, दान करना, भोजन पकाना, अंश या भाग होना)।

भाजयत = सेवन करायें (भज - सेवा करना)।

भाव्यम् = उत्पन्न होने वाला (भू - होना, उत्पन्न होना)।

भीमः = भयङ्कर (भी - डरना)।

भुञ्जीथा = भक्षण करो, भोग करो, संरक्षण करो, पालन करो (भुज् - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

भुवः = भुवः (भू - होना, प्राप्त होना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भुवत् = हुआ (भू - होना)।

भुवनम् = हो रहा, वर्तमान (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

भुवनस्य = भुवन का (भू - होना, प्राप्त होना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भुवनानि = भुवनों को (भू - होना)।

भूः = भू (भू - होना, प्राप्त होना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भूतम् = उत्पन्न हुआ (भू - होना, उत्पन्न होना)।

भूतस्य = भूत का, उत्पन्न हुए का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भूतानि = भूत, उत्पन्न, हुए, प्रभूत, सम्भूत, प्राणियों को (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भूतेषु = भूतो में (भू - होना)।

भूमिः = भूमि (भू - होना)।

भूमिम् = भूमि को (भू - होना)।

भूय = पुनः, अधिक (अव्यय)।

भूयसीः = अधिक, पुनः-पुनः (अव्यय)।

भूयिष्ठाम् = पुनः पुनः (अव्यय)।

भूयेम = होते रहें (भु - जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।

भोजनानि = भोजन (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)।

म

मत्सत् = आनन्दित हो (मद् - आनन्द होना, हर्षित होना)।

मदानाम् = मदो में (मद - तृप्त करना, समाधान करना)।

मधुनः = मधु का (मद-मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मधुमत् = मधुयुक्त (मध्-मद् - मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मधुमतीः = मधुयुक्त (मध्-मद् - मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मधुमान् = मधुरता युक्त (मध्-मद् - मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)।

मध्ये = बीच में (सर्वनाम)। ।

मनः = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मनसा = मन के साथ, मन द्वारा (मन् - जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मनसो = मन से (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना)।

मनस्वान् = मनस्वी (मन् - जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मनांसि = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मनीषया = मनीषा द्वारा, विचारशीलता द्वारा (मन् - जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मनीषिणो = मनीषी (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

मनीषी = विचारक, विद्वान् (मन् - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना)।

मनुष्यान् = मनुष्यों को (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार

करना, विचार करना, मानना)।

मनो = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

मन्त्रः = मन्त्र, मन्त्रणा (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, मन्त्र = मन्त्रणा करना, विचार करना, गुप्त भाषण करना)।

मन्त्रम् = मन्त्र को (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, मन्त्र = मन्त्रणा करना, विचार करना, गुप्त भाषण करना)।

मन्त्रये = मन्त्रित करते हैं (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, मन्त्र = मन्त्रणा करना, विचार करना, गुप्त भाषण करना)।

मन्दसे = आनन्दित होते हो (मन्द् - स्तुति करना, तुष्ट करना, आनन्द करना, उन्मत्त होना)।

मम = मेरा (सर्वनाम)।

मया = मेरे द्वारा (सर्वनाम)।

मयि = मुझमें (सर्वनाम)।

मयोभुवः = प्रगतिशील होकर (मय - जाना, स्थानान्तर करना)।

मरुद्भ्यो = मरुतों के लिए (मृ-मरना)।

मर्त्यस्य = मरणशील का (मृ - मरना, मृत्यु होना)।।

महत् = महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

महते = महान् के लिए, महत् के लिए (मह - सम्मान करना, पूजा

करना)।

महामाम्नयो = महान् नाम वाले (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, नाम् - नाम होना, नाम रखना)।

महि = पूजनीय (मह- सम्मान करना, पूजा करना)।

महित्वा = महत्ता द्वारा, महत् होकर (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिना = महि द्वारा, महिमा द्वारा (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महिमा = महिमा, महत्ता, महात्म्य (मह् - महत्व होना, पूज्य होना)।

महिमानः = महत्व से युक्त (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

मंहिष्ठो = महानतम, सर्वाधिक प्रकाशित, सबसे बड़ा (महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)।

महे = हे महान्, पूज्य, महिमावान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, कहना)।

महोभिः = महत्ता द्वारा (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

मह्ना = महत्ता द्वारा (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना)।

मह्यम् = मेरे लिए (सर्वनाम)।

मा = नहीं (सर्वनाम)।

मा (माम्) = मुझे, मुझको (सर्वनाम)।

मागधम् = मागध को (मग्-लेना, मगध्-घेरना, चाकरी करना)।

मातरः = माता (मा - मान करना, मापना)।

मातरिश्वनो = मातरिश्वा का, माता में प्रगति, वृद्धि करने वाले का (मा - मान करना, श्वि - चलना, वृद्धि करना। श्वस् - श्वास लेना, जीते रहना)।

मातरिश्वा = मातरि-श्वा, मातृ-वृद्धिकर्ता, मातृ-वर्द्धित, मातृ-गामी (मा - मान करना, मापना, तौलना, तुलना करना, श्वि - चलना, जाना, जानना, पाना, वृद्धि होना)।

मानुषे = मानुषों में (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)।

मायया = माया द्वारा, मान, मापन, तुलना द्वारा (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मित्रः = मित्र (मिद् - स्नेह करना)।

मित्रम् = मित्र को (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, मृदुल होना)।

मित्रस्य = मित्र का (मिद् - स्नेह करना, प्रीति करना)।

मिनाति = प्रक्षेपण करता है, स्थापन करता है, रक्षा करता है (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना)।

मिमाथाम् = प्रक्षेपण, स्थापन, रक्षा, मान करो (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

मृगो = मृग, अन्वेषी, आखेटक, मृत्युगामी, मृत्यु की ओर ले जाने वाला (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना, मृ - मरना, गम् - जाना)।

मृत्युः = मृत्यु (मृ - मरना, देहत्याग करना)।

मृत्युम् = मृत्यु को (मृ = मरना, देहत्याग करना)।

मृधो = हिंसक, आद्र (मृध् - दबाना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, आद्र करना, गीला करना, गीला होना)।

मुखम् = मुख, सत्य स्वरूप (मुख - मुख्य होना, जाना, खाना)।

मुखात् मुख से (मुख् - जाना, जानना, पाना, खाना)।

मूर्ध्नो = उच्च (मूर्ध-मूर्द्ध - उच्च होना)।

मैघीः = सिञ्चन करने वाले (मिह् - सिञ्चन करना, घर्षण करना, दबाना)।

मे = मेरे लिए, मेरा (सर्वनाम)।

मोहः = मोह, भूल, भ्रम (मुह् - मोह होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)।

य

यः = जिसने, जो (सर्वनाम)।

यक्षम् = पूज्य, पूजन (यक्ष् - पूजा करना)।

यच्छ = दो, प्रदान करो (यच्छ - देना)।

यच्छतु = दो, प्रदान करो (यच्छ - देना)।

यजत्राः = यजनपालक, यजन करने वाले (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजन्ति = यजन करते हैं (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)।

यजमानस्य = यजमान का (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगतिकरण करना)।

यजुः = यजुः, यजुष् (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजूंसि = यजुष् (यज - देव-पूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञः = यजन, यज्ञ (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञपतिः = यज्ञपति, यजन का स्वामी, रक्षक (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, पत् - ऐश्वर्य होना)।

यज्ञपतिम् = यजनपति को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, पत् - ऐश्वर्य होना, श्रीमान् होना, शक्तिमान होना)।

यज्ञम् = यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)।

यज्ञस्य = यजन का (यज्ञ = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञात् = यजन से (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञानाम् = यजनों का (यज् - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)।

यज्ञायज्ञियम् = यजन ही यजन को (यज = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यजूंषि = यजुष्, यजुर्वेद के मन्त्र (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यज्ञे = यज्ञ में (यज - देवपूजा करना, देना, संगति करना)।

यज्ञेन = यज्ञ द्वारा (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)।

यत् = जिसे, जो (सर्वनाम)।

यतः = जिससे (सर्वनाम)।

यतो-यतो = जहाँ-जहाँ से, जैसे-जैसे (सर्वनाम)।

यत्र = जहाँ (सर्वनाम)।

यथा = जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)।

यथायथम् = यथावत्, यथोचित, जैसा-जैसा (अव्यय)।

यम् = जिसे, जिसको, (सर्वनाम)।

यमत् = यमन करता है (यम् - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यमन् = यमन करने वाला, यमन करता हुआ (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।

यवम् = यव को, समाप्ति, उपसंहार, मिलाने-अलग करने वाले को (यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यवमन्तो = यवयुक्त, समाप्ति, उपसंहार, मिलाने-अलग करने, पृथक् करने वाले (यु - मिलाना, अलग करना, यव - समाप्त करना, उपसंहार करना)।

यशः = कीर्ति (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यशसम् = यश, कीर्ति को (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)।

यस्मात् = जिससे (सर्वनाम)।

यस्मिन् = जिसमें (सर्वनाम)।

यस्य = जिसके, जिसका (सर्वनाम)।

यातम् = प्राप्त, गत, गया हुआ (या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

याता = प्राप्त करो (या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

याथातथ्यतो = ठीक - ठीक, यथा-तथ्य, तथ्य के अनुसार (यथा - जैसे, जिस प्रकार, तथा - वैसे, उसी प्रकार)।

युजो = युक्त करने वाले (युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)।

युज्यन्ते = युक्त करते हैं (युज - जुड़ना, मिलाप करना, एकत्र करना, चित्त स्थिर करना, मन को रोकना)।

युक्तग्राव्णो = शब्दयुक्त, मिश्रित (युज् - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, ग्रु - शब्द करना)।

युध्यमाना = युद्ध करने वाले (युध् - युद्ध करना, लड़ाई करना)।

युनक्ति = नियुक्त करता है (युङ्क् - मिलाप करना, एकत्र करना, जुड़ना)।

युयोधि = अलग किया (यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, युध् - युद्ध करना)।

युवद्रिक् = तुम दोनों की ओर देखने वाला (युव - तुम दोनों (सर्वनाम), यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, यु - पृथक् पृथक् करना, दृक्- दृक्ष् - देखना)।।

युवम् = तुमको (सर्वनाम)।

युवसे = युक्त करते हो (यु - संयोग-वियोग करना, मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना)।

युवोः = तुम दोनों का (सर्वनाम)।

ये = जो (सर्वनाम)।

येन = जिसके द्वारा, जिससे (सर्वनाम)।

येमानो = जाते हुए (या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)।

यो = जो (सर्वनाम)।

योः = मिलने वाला (यु - मिलना, मिलाना, अलग करना)।

र

रक्ष = रक्षा करो (रक्ष - रक्षण-पालन करना)।

रक्षः = रक्षा करने वाला, रक्षक, बचाने वाला (रक्ष् - रक्षा करना, बचाना)।

रक्षो = बचाने वाला (रक्ष् - रक्षा करना, बचाना)।

रजता = रजत युक्ता, रंजन करने वाले, रंगने वाले (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजसः = लोक का, रजस् का (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रजसो = रजस् का (रज् - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)।

रणाय = रण, शब्द के लिए (रण - शब्द करना, जाना)।

रताः = रत हैं (रम् - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना)॥

रत्नधातमम् = रत्न, रमणीय को धारण करने वाले को (रत्-रम् - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना)।

रत्नम् = मूल्यवान् को, रत्न को (रम् - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना)।

रथ = रथ (रम् - रमना, रमण करना)

रथन्तरम् = रथन्तर को, रमणीय को तरने वाले, पार करने वाले (रम्

- रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, तॄ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)।

रथम् = रथ को (रम - रमना, प्रिय होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथासः = रथ, रमणीय (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथे = रथ में (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रथेन = रथ द्वारा (रम् - रमना, प्रिय होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

रध्रस्य = रध्र का, पूर्णता का (रध - पूरा करना, समाप्त करना, अपकार करना, मार डालना, दुःख देना, पक्व होना, पकना, शुद्ध होना, निर्दोष होना, भूल न करना)।

रमय = रमण करो (रम - रमना, क्रीडा करना, खेलना)।

रयिम् = प्रगति, विद्या, ज्ञान, वाणी को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)।

रयीणाम् = प्रगतिशीलताओं का, विद्याओं का (रय् - जाना, जानना, पाना)।

रराणः = रमण करता हुआ, शब्द करता हुआ (रम् - रमना, रमण करना, रण - शब्द करना, जाना, रन् - अलग करना, मिलाना)।

रसः = रस (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)।

रसया = रस द्वारा (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)।

राजति = प्रकाशित होता है (राज् - चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना)।

राजन्तम् = प्रकाशमान, प्रकाश करने वाले, प्रकाश करते हुए (राज् =

चमकना, प्रकाशित-शोभित होना)।

राजन्यः = राजकर्मी (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजन्यम् = राजन्य को, राजकीय कर्मियों को (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

राजा = राजा, प्रकाशक (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)।

रातहव्या = रातहवि, प्रदत्त दान, दान योग्य (रा - देना, मिल जाना, हु - देना, आदान-प्रदान करना)।

रातहव्यः = प्रदत्त दान (रा - देना, मिल जाना, हु - देना, आदान-प्रदान करना)।

रात्रीः = रात्रि, अर्थात् विश्राम देने वाला, निद्रा देने या मिलने वाला समय (रा - देना, मिल जाना)।

राधः = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि (रध् - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

राधसः = सिद्ध, निर्णय, वृद्धि का (राध् - सिद्ध करना, पूरा करना, निर्णय करना, बढ़ना)।

राधिषि = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि, सिद्ध करें (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।

राध्यताम् = पूर्ण करो (रध् = पूर्ण करना)।

राये = गतिशीलता में, दान में, शब्द में, वाणी में (रै - शब्द करना, रय् - गति करना, जाना, रा - देना, दान करना)।

रुहेम = बढ़ें (रुह - बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रूपाणि = रचना, आकार, रूप (रूप - आकार बनाना, रचना करना,

मन में रूपाकृति लाना)।

रेजमाने = प्रकाशमान (रेज् - चमकना, प्रकाशित होना)।

रेवत्यो = गतिशीलता, वाणी (रिव् - उड़ना, तैरना, बहना, री - गति करना, शब्द करना)।

रोदसी = रोने वाला, रुलाने वाला, करुण (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना)।

रोहन्तम् = रोहण करने वाले, चढ़ते हुए, बढ़ते हुए को (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रोहेम = चढ़ते रहें, बढ़ते रहें (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

रौहिणम् = रोहणकर्ता को (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)।

ल

लक्षम् = लक्ष को (लक्ष् - देखना, विचार करना)।

लोका = लोक, दृश्य (लोक् - देखना, प्रकाशित होना, बोलना)।

लोकान् = लोकों को (लोक् - देखना, बोलना)।

लिप्यते = लिप्त होता है (लिप् - लिप्त होना, लेपन करना, बढ़ाना, अधिक करना)।

लोम = लोम, छिद्र (लू - छेदना, काटना)।

व

वः = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)।

वक्षति = पालन, रक्षा करता है (वक्ष - पालन करना, रक्षा करना, वक्ष - क्रोध करना, एकत्र करना, ढेर करना)॥

वज्रबाहुः = वज्रबाहु (वज् - गति करना, जाना, बाह् - प्रयास करना,

बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)।

वज्रहस्तः = वज्रहस्त, गतिग्राही, वज्र ग्रहण करने वाले, हाथ में वज्र वाले (वज् - गति करना, जाना, हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)।

वत्सो = वत्स, वाणी (वद् - कहना, बोलना)।

वदध्वम् = बोलें (वद् - कहना, समझाना)।

वदेम = कहें (वद - स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)।

वनथः = सेवा, सहायता, शब्द करते हो (वन् - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपदाग्रस्त होना, मिश्रित होना, वर्षा होना, स्मरण करना, अंकुरित होना, याचना करना, उद्योग-व्यापार करना)।

वनस्पतयः = वनस्पतियाँ (वन् - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, पत् - ऐश्वर्य होना)।

वनस्पते = हे वनस्पति (वन - शब्द करना, सेवा करना, चाकरी करना, पत् = ऐश्वर्य होना, जाना, जानना)।

वनुषे = वाणी, सेवा, सहायता के लिए (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, वनु - याचना करना, मांगना)।

वन्धुरायुः = विद्वानों से मिलाने वाले (वन्धुरा-युः। वन्धुर-आयुः। वन्धुर-आ-युः। वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, वन् - स्मरण करना, वन् - बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, यु - मिलना, अलग करना, मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना। आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय् - जाना, जानना, पाना, गति करना, आय् - शब्द करना, शासन करना)।

वपुः = उत्पन्न करने, बुनने वाले (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)।

वयम् = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)।

वयुनानि = रचनाशील (वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)।

वरदा = वर देने वाली (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना, दा - देना)।

वरीयो = वरीय, वरणीय, प्रिय (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

वरुणः = वरुण (वृ - वरण करना, पालन करना)।

वरेण्यम् = वरण योग्य (वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, नियमित करना, आच्छादित करना)।

वर्णम् = वर्ण को, वरणीय को, प्रेरणा को (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंगना)।

वर्धनम् = वर्धन को, बढ़ाने वाले को (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्धमानम् = बढ़ते हुए, वृद्धि करते हुए (वृध - बढ़ना, अधिक होना)।

वर्धासि = बढ़ते हो, बढ़ाते हो, बढ़ो, बढ़ाओ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।

वर्षतु = बरसो, वर्षा करो (वर्ष - बरसना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)॥

वर्षाः = वर्षा (वर्ष् - बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)।

ववर्तत् = वर्तमान रहता है, व्यवहार करता है (वृत् - रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ - नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)

वसन्तः = वसन्त, वसते हुए, वास करते हुए, वास करने वाले (वस् - वसना, रहना, निवास करना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वसन्तो = वसन्त (वस् - निवास करना)।

वसु = वसु (वस - निश्चल होना, निःछल होना, निवास करना, पोशाक धारण करना)॥

वसूनि = वसुओं को (वस् - वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वसूयुम् = वसुयुक्त, वसु से मिलाने वाले (वस् - वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना, यु - मिलाना, अलग करना)।

वसोः = वसु का, वासस्थान का, वास करने वालों का (वस् - वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)।

वहति = वहन करता है (वह् - वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वहन्ति = वहन करते हैं (वह् - वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।

वा = अथवा (अव्यय)।

वाक् = वाणी (वच्- बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाघतः = उत्थान से (वघ् - रुकना, उठना, उत्थान करना)।

वाचस्पतिः = वाणी का रक्षक, पालक (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना, पत् - जाना, नीचे जाना,उड़ना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)।

वाचः = वाणी के (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाचम् = वाणी को (वच - बोलना, कहना, समझाना, पढ़ना, अध्ययन करना)।

वाजम् = विद्या को, गति को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)।

वाजरत्ना = वाज-रत्न, ज्ञान-रत्न (वाज् - गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, रम् - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना)।

वाजसातौ = प्रगतिसेवी, प्रगतिदाता (वज् - जाना, जानना, तैयार करना, सन् - सेवा करना, दान करना, मिलाना, अलग करना)।

वाजिनः = बलशाली, वेगवान, तीव्र गति वाले (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना)।

वातः = वात (वात् - सुखी होना, सेवा करना, जाना)।

वाम् = तुम दोनों को (सर्वनाम)।

वामदेव्यम् = वामदेव्य को, सुगन्ध, विद्या को, गति-ज्ञान, प्राप्ति की दिव्यता को (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)।

वायवः = गतिशील, रचनाशील (वे - वुनना। वा - गति करना)

वायव्यान् = वायव्यों को (वा - गति करना, बहना, पवन-सा चलना, वे - बुनना, रचना करना)।

वायुः = वायु, गतिशील, सृष्टिकर्ता (वा - गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना)।

वास्यम् = वासयोग्य, वासमय, आच्छादित, व्याप्त (वस् - रहना, निवास करना, आच्छादन करना)।

वि-अकल्पयन् = विशेषकर कल्पना की है (वि - विशेष, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कल्प् - कल्पना करना)।

वि-अक्रामत् = विशेष रूप से प्राप्त हुआ (वि - विशेष, अ - भूतकालिक

क्रिया उपसर्ग, क्रम् - चलना, जाना, जानना, पाना, निर्भयता से जाना, रक्षा करना)।

वि अदधुः = विशेष रूप से धारण किया (वि - विशेष, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धा - धारण करना)।

विक्रमस्व = पराक्रम करो, रक्षा करो (वि - विशेष, क्रम = निर्भयता से जाना, वृद्धि करना, रक्षा करना, बचाना)।

विचिकित्सति = संशयग्रस्त होता है (वि - विशेष, विपरीत, चिकित् - जानना, वि-चिकित् - संशय होना, भ्रम होना)।

विच्छन्दा = विच्छन्द, विशेष छन्द (वि - विशेष, छन्द् - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ढकना)।

विज = विजेता, भयंकर (विज - डरना, डर से कांपना, आपदाग्रस्त होना, विपत्ति में पड़ना)।

विजयन्ते = विजय करते हैं, विजयी होते हैं (वि - विशेष, जि - जय होना, जीतना)।

विदथम् = विदथ को, विद्वान् को (विद - सुधि रखना, समझना, जानना, समझाना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)।

विदथेषु = ज्ञान प्राप्ति में, ज्ञानियों में (विद् - जानना)।

विद्यया = विद्या द्वारा (विद - जीना, विद्यमान होना, रहना)।

विद्याम् = विद्या को (विद् - विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

विद्यायाः = विद्या से (विद - विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)।

विद्यायाम् = विद्या में (विद - जानना, समझना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना)।

विद्युतः = विद्वान्, विशेष प्रकाशमान (वि - विशेष, विद् - जानना, द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

विद्युते = विद्युत के लिए (विद् - विद्यमान होना, रहना। वि - विशेष (उपसर्ग)। द्युत् - चमकना, प्रकाश होना)।

विद्युतो = विद्वान्, विशेष प्रकाशमान (वि - विशेष, विद् - जानना, द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)।

विद्वान् = जानने वाला, ज्ञानी (विद् - जानना)।

विधते = विशेष धारण के लिए (वि - विशेष, धा - धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।

विधाता विधान करने वाला (वि - विशेष, धा - धारण करना),

विधेम = विधान करें, विशेष धारण करें (वि - विशेष (उपसर्ग), धा - धारण करना)।

विनाशम् = विशेषतः नष्ट हो जाने वाले को (वि - विशेष, नश् - खो जाना, नष्ट होना, दिखाई नहीं देना)।

विनाशेन = विनाश द्वारा (वि - विशेष, नश् - खो जाना, नष्ट होना, दिखाई नहीं देना)।

विपन्यया = विशेष स्तुति द्वारा (वि - विशेष, पन - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

विभक्तारम् = विभाग करने वाले (भज् - सेवा करना, दान करना, वि-भज् - विभाजन करना, बाँटना)।

विभाति = विशेष प्रकाशित होता है (वि - विशेष, भा - चमकना, प्रकाशित होना)।

विभृतम् = विशेष भरण करने वाला (वि - विशेष, भृ - भरण करने वाला)।

विभूः = विशेष रूप से हुआ (वि - विशेष। भू - होना, पाना, चिन्तन करना)।

विममे = विशेष मान किया, निर्माण किया, रचा (वि - विशेष, मा - मापना, मान करना, शब्द करना, समाना, वि-मा - विशेष मान करना, निर्माण करना, बनाना)।

विमानः = विशेष मान, निर्माण (वि - विशेष, मा - मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना)।

वियूय = विलग कर (वि = विशेष, विना, विलोम, यु = मिलाना, अलग करना)।

विराजो = विराज, विशेष प्रकाश से (वि - विशेष, राज् - चमकना, शोभित होना, तेज होना)।

विराट् = विराट्, विशेष ध्वनि, शब्द (वि - विशेष, रट् - ध्वनि करना, शब्द करना)।

विरोह = विशेष रोहण करो (वि - विशेष, विना, विलोम, रुह - बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना)।

विवस्वत् = विशेष वासयुक्त, विशेष वास देने वाले (वि - विशेष, वस - निवास करना)।

विश्व = सभी।

विश्वकर्मा = सम्पूर्ण कर्म करने वाला (विश्व = सब, कृ - करना)।

विश्वतः = सबसे, विश्व से (सर्वनाम)।

विश्वतोः = सब ओर से (सर्वनाम)।

विश्वधा = सबको, विश्व को धारण करने वाला (विश्व - सब कुछ, सभी, धा - धारण करना)।

विश्वधाया = सम्पूर्ण धारण करने वाली (विश्व - सब, धा - धारण करना)।

विश्वम् = सबको, विश्व को।

विश्ववेदसम् = सर्वज्ञ, सभी वेद (विश्व - सब (सर्वनाम)। विद् = जानना)।

विश्ववेदाः = विश्ववेद, सर्वज्ञ, सब कुछ जानने वाले (विश्व - सभी, विद् - जानना, समझना, विद्यमान होना)।

विश्वस्य = विश्व का, सभी का (सर्वनाम)।

विश्वस्या = विश्व का, सभी का (सर्वनाम)।

विश्वह = विश्व, सभी (सर्वनाम)।

विश्वा = विश्व सभी, सब (सर्वनाम)।

विश्वानि = सभी (सर्वनाम)।

विश्वायुः = सम्पूर्ण आयु (विश्व = सब, आयुः = आयु, जीवन। आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय - जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु - मिलना, अलग करना)।

विश्वे = सभी (सर्वनाम)।

विश्वेदेवाः = विश्वदेव, सभी देवगण (विश्व - सभी, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)।

विश्वेषाम् = सभी क़ा, विश्व का (सर्वनाम)।

विष्णवे = विष्णु के लिए (विष्ण् = व्याप्त होना)।

विष्णुः = व्यापक (विष् - व्याप्त होना)।

विष्णो = विष्णु, व्यापक (विष्ण् = सींचना, व्याप्त होना)।

विष्वङ् = विश्व अथवा व्याप्त (विष्-विविष् - व्याप्त होना)।

विह्वयेते = विशेष आह्वान करते हैं (वि - विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। हु-ह्वे - शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

वीतये = व्याप्त होने के लिए, प्रकाश के लिए (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)।

वीरवत्तमम् = अत्यन्त वीर के समान (वीर - शूरवीर होना, पराक्रम करना)।

वीर्येण = पराक्रम द्वारा, सामर्थ्य द्वारा (वीर् - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।

वीरहणम् = वीरहण को (वीर् - वीरता दिखाना, वीर होना, हण् - शब्द करना, कलह करना, हन् - चलना, गति करना, हिंसा करना)।

वृक् = आदान कर्ता (वृक- लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना)।

वृणीमहे = वरण करते हैं, स्वीकार करते हैं (वृ = वरण करना, स्वीकार करना, आनन्द करना, उत्साह करना)।

वृता = वर्तमान (वृत - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, रुचना, रुचि

होना, रुचि लेना, होना)॥

वृत्राणि = वृत्रों को, हिंसकों को (वृत् - हिंसा करना, वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)।

वृत्वा = आवृत कर, ढक कर (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)।

वृद्धश्रवाः = वृद्धश्रव, बड़े विद्वान्, सुनकर अभिवृद्ध हुए, बड़े हुए (वृध् - बढ़ना, अधिक होना, काटना, चीरना, भरना, पूर्ण करना, चमकना, बोलना, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

वृधः = वृद्धि (वृध - बढ़ना, अधिक होना)।

वृषन् = शक्तिशाली, पराक्रमी, वर्षक (वृष - वर्षा करना, सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, प्रजोत्पत्ति करने में समर्थ होना)।

वृषभः = पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

वृषभो = पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)।

वेद = वेद, ज्ञान, जानो, जानता है (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदम् = वेद को, ज्ञान को (विद् - जानना, समझना, विद्यमान होना)।

वेदमाता = वेद माता (विद् - जानना, समझना, विद्यमान होना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)।

वेद्यम् = जानने योग्य (विद् - जानना, समझना, विद्यमान होना)॥

वेनः = विद्वान् (वेन - जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, मिलाना, अलग करना, रक्षा करना, वाद्य यन्त्र बजाना)।

वेषाय = अनुपयोगी होने पर अलग करने के लिए, सींचने के लिए (विष् - विलग करना, प्रयोग न होने से निकाल देना, विष - सींचना, व्यापना)।

वैश्यः = वैश्य, सूचना, प्रेरणा, प्रवेश करने वाला (विश्-सूचना देना, प्रेरणा देना, प्रवेश करना)।

वैश्यम् = वैश्य को, सूचना, प्रेरणा, प्रवेश करने वाले को (विश्-सूचना देना, प्रेरणा देना, प्रवेश करना)।

वो = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)।

व्यचसः = व्यापक, आदर करने वाला, याचना करने वाला (व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)।

व्यथमानाम् = व्यथमान को, व्यथित को (व्यथ - व्यथित होना, दुःखी होना)।

व्यदधात् = धारण करता है (वि - विशेष। अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग। धा-दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।

व्रजत = ले चलो (व्रज - जाना, पूर्ण करना, सिद्ध करना)।

व्रतपते = व्रत के रक्षक, स्वामी (वृ = वरण करना, पत् - ऐश्वर्य होना)।

व्रतपाः = व्रतों के पालक (वृ - वरण करना, पा - रक्षा करना, पालन करना)।

व्रतम् = व्रत को (वृ = वरण करना)।

व्रतानि = व्रतों को (वृ = वरण करना)।

व्रात्य = हे व्रात्य (वृत् - रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ - नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, नियमित करना)।

व्रात्याय = व्रात्य के लिए (वृत् - रहना, होना, वरण करना, चमकना,

बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ - नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, नियमित करना)।

श

शकेयम् = कर सकूँ (शक् - सक्षम होना, कर सकना)।

शचिष्ठया = वाणी द्वारा (शच - स्पष्ट बोलना)।

शचीभिः = उत्तम वाणियों द्वारा (शच - स्पष्ट बोलना)।

शत-धारम् = सैकड़ों धाराओं वाला (शत = सौ, धाः- धारा होना, धार बाँधना)।

शतधारेण = सैकड़ों धाराओं वाले से।

शतम् = सौ (संख्या)।

शत-वल्शो = सौ आच्छादनों युक्त (शत - सौ, वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, जाना)।

शतात् = सौ से (संख्या)॥

शत्रून् = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)।

शम् = कल्याणकारी, शमन, शान्ति, सुख, कल्याण (शम् - सुख होना, कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शम्बरम् = शम्बर को, ताडनकारी को (शम्ब्- जल होना, ताडन करना, गर्जन करना, मर्दन करना)।

शम्यन्तीः = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् - कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शम्यन्तु = शान्ति करे, शमन करें, कल्याण करें (शम् - कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शयानम् = शयन करते हुए को (शी-शय् = शयन करना, सोना)।

शरत् = शरत् (शृ - सुनना, जाना)।

शरदः = शरद् (शृ - सुनना, जाना, मारना)।

शरीरम् = शरीर (शृ - सुनना, शृ - फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)।

शर्धते = जीतता है, सहन करता है (शृध् - सहन करना, जीतना, शक्ति होना, सामर्थ्य होना)।

शर्वा = हिंसक (शर्व - क्षत करना, घाव करना, मार डालना)।

शशमानम् = शमनकारी को, कूर्दन करने वाले को (शम् - शमन करना, शान्त करना, विचार करना, प्रसिद्ध करना, स्पष्ट दिखाना। शश् - कूर्दन करना, कूदना, उछलना, कूदते हुए चलना)।

शश्वतो = शश्वत (शश्व्- नित्य होना, सदैव होना, शश्वत होना)।

शंसन्तम् = स्तुति करने वाले को, प्रशंसा करने वाले को (शंस् = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शंसाः = स्तुतियाँ, प्रशंसाएँ (शंस् - इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)।

शान्तिः = शान्ति (शम् - कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना, प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।

शाश्वतीभ्यः = शाश्वतों के लिए (शश्व् - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना, श्वि - जाना, वृद्धि होना)।

शिव = कल्याणकारी (शिव् - कल्याण करना)।

शिवतमो = अत्यन्त कल्याणकारी (शिव् - कल्याण करना)।

शिवो = कल्याणकारी (शिव् - कल्याण करना, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, शी - सोना, शयन करना)।

शृणुयाम = सुनें (श्रु-शृण् = सुनना)।

शृध्याम् = जय में, शक्ति-सामर्थ्य में (शृध् - सहन करना, जीतना, शक्ति होना, सामर्थ्य होना)।

शीर्ष्णो = शिर (शीर्ष - शीर्ष होना, उच्च होना, मुख्य होना)।

शुक्र = पवित्र (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना,जाना),

शुक्रम् = शुद्ध, पावन, शुक्र (शुच्, शुक् - पावन होना, शुद्ध होना, शुद्ध करना)।

शुद्धम् = शुद्ध, पवित्र (शुध् - शुद्ध होना, पवित्र होना)।

शुष्मात् = शुष्म से, शोषण से सुखाने से (शुष् - सूखना, सुखाना)।

शुश्रुम = सुनते है (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

शूद्रम् = शूद्र को, शुद्धिकर्ता को (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना)।

शूद्रो = शूद्र, शुद्धिकर्ता, शुद्ध (शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना)।

शोकः = शोक, दुःख, चिन्ता (शुच - दुःख मानना, शोक करना, चिन्ता करना)।

शोचिषे = पवित्र के लिए (शुच् - पवित्र होना, पवित्र करना)।

श्र

श्रत् = सत्य को (उपसर्ग)।

श्रितः = सेवित, परिपक्व, आश्रित (श्री - सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)।

श्रियम् = श्रिय को, श्रेय को, आश्रय को (श्री - सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)।

श्रुतम् = श्रुत को, सुने हुए को (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रुतेन = श्रुत द्वारा (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

शुश्रुम = सुनते है (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रेष्ठतमाय = श्रेष्ठतम के लिए (श्रि - सेवा करना)।

श्रोत्रम् = श्रोत्र (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)।

श्रोत्रात् = श्रवण से (श्रु - सुनना)।

श्वघ्नी = द्रुतगामी (शव-श्व - जाना, भागना, दौड़ना)।

ष

षट्पदाः = छह पद वाले (षट् - छह, (संख्या, सर्वनाम), पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना, भूषित होना)।

षु (सु) = उत्तम, अच्छा (सर्वनाम)।

षोडशी = सोलह से युक्त (षोडश - सोलह, संख्या)

ष्ठा = स्थित (स्था - स्थित होना, ठहरना)।

ष्यामि = अन्त करता हूँ, नष्ट करता हूँ (सो-स्य - अन्त करना, नष्ट करना)।

स

स = वह, उसने (सर्वनाम)।

सः = वह (सर्वनाम)।

सखा = सखा (सख् - मित्र होना)।

सखीनाम् = मित्रों के (सख् - मित्र होना)।

संकल्पम् = संकल्प वाला (सम् - सम्यक् रूप से, भली-भाँति (उपसर्ग)। कल्प - शक्तिमान होना, समर्थ होना, कल्पना करना, विचार करना)।

सङ्कल्पाः = सङ्कल्प (सम् - सम्यक्, कल्प - शक्तिमान होना, समर्थ होना, कल्पना करना, विचार करना)।

संगतिम् = सङ्गति, सङ्गति करने वाले (सम् - सम्यक्, गम् - जाना)।

सचते = सींचता है (सच् - सींचना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, पूर्णतः समझना, सम्बन्धी होना)।

सचन्त = सन्तुष्ट करते हैं (सच् - सेवा करना, सन्तुष्ट करना, सींचना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचन्ते = अभिसिञ्चन करते हैं (सच् - सेवा करना, सन्तुष्ट करना,

सींचना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)।

सचस्वा = संयुक्त करो (सच - पूरा समझना, अच्छी तरह जानना, सम्बन्धी होना, संसर्गी होना)।

सच्छन्दाः = सच्छन्द (स - सहित, साथ, (उपसर्ग), छन्द् - बल-प्राण होना, आच्छादन करना)।

सत् = सत्य, नित्य को (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्यः = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्यधर्मा = सत्य धर्म युक्त (सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना। धृ - धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)।

सत्यम् = सत्य को (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्यस्य = सत्य का (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्यो = सत्य (सत् - सत्य होना, अस्तित्व होना)।

सत्सि = बैठते हो, जाते हो (सद् - बैठना, जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)।

सदा = सदा, सर्वदा, सदैव, सर्वकाल में (अव्यय)।

सदो = स्थित, विद्वान्, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।

सधस्थात् = सहस्थान, सहगामी, साथ (सध - सह, साथ। स्था - स्थित होना, ठहरना)।

सधस्तुतिम् = सध-स्तुति, साथ स्तुति करने वाले को (सध - साथ (अव्यय), स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

सन्ति हैं (अस् - होना)।

सन्तु = हों (अस् - होना)।

सन्दृशि = सम्यक् दृष्टि में (सम् - सम्यक्, दृश् - देखना)।

सप्त = सात (संख्या)।

सप्तरश्मिः = सप्तरश्मि (सप्त - सात, रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)।

सप्तहोता = सात होता युक्त (सप्त - सात, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना)।

सप्रथाः = सप्रथा, पूर्ण ज्ञान युक्त, विस्तृत (स - सहित, साथ। सप् - पूर्ण ज्ञान होना। प्रथ - विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)।

सम् = सम्यक् रूप से, भलीभाँति (उपसर्ग)।

समत्सु = सम्यक् सतत गतिशील, समानताओं में (सम् = सम्यक् रूप से, भलीभाँति (उपसर्ग), सम् - समान होना, सम विभाग करना, न घबराना, परिणाम होना, अत् - निरन्तर चलना, सतत गमन करना)।

समना = समान मन वाले (स - सहित, साथ, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)।

समाः = सम विभाग, सम्वत्सर (सम - सब, सम् - समान विभाग करना, समान होना, घबराने-हिचकिचाने से रोकना)।

समानम् = समान (सम् - सम्यक् रूप से, भलीभाँति, सम् - न घबराना, एक समान रहना)।

समाना = समान (सम् = न घबराना, एक समान रहना)।

समानी = समान (सम् = न घबराना, एक समान रहना)।

समानेन = समान द्वारा (सम् = न घबराना, एक समान रहना)।

समानो = समान (सम् = न घबराना, एक समान रहना)।

समाभ्यः = समता के लिए, सम-विभाग के लिए (सम - समान होना, सम विभाग करना, सम विभाग होना। न घबराना, परिणाम होना)॥

समितिः = समिति, समत्व, समता (सम् = न घबराना, एक समान रहना)।

समिद्धः = सम्यक प्रकाशवान् (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना),

समिधः = समिधा, दीप्ति, प्रकाश (सम् - सम्यक्, इध्-इधि-इन्ध् - दीप्त होना, प्रकाशित होना)

समीहषे = सम्यक् प्रयास करते हैं (सम् - सम्यक्, (उपसर्ग), ईह - इच्छा करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना)।

समीक्षन्ताम् = देखें (सम् - सम्यक्, ईक्ष- देखना)।

समीक्षामहे = देखते हैं (सम् - सम्यक्, ईक्ष - देखना)॥

समीक्षे = देखें (सम् - सम्यक्, ईक्ष- देखना)।

समुद्रम् = समुद्र (सम् - सम्यक्, भलीभांति, सम् - न घबराना, एक समान रहना, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना, द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)।

सम् अवर्तत = सम्यक् वर्तमान हुआ (सम् - सम्यक्, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना, होना)।

सम्भव = सम्यक् हो, सम्भव हो (सम् = सम्यक्, भलीभांति, भू = होना)।

सम्भवात् = सम्यक् रूप से होने से (सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

सम्भृतम् = सम्यक् भरण किया (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, भृ - भरण करना, भरना)।

सम्भूतिम् = सम्यक् होने को (सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

सम्भूत्या = सम्भूति द्वारा, सम्यक् रूप से हुए द्वारा (सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

संयती = संयत्, सम्यक् प्रयत्न, सम्यक् आदेश, सम्यक् एकत्रीकरण करने वाले (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, यत् - दुःख देना, मारना, ठोकना,

चपेटना, आज्ञा करना, एकत्र करना, मना करना, रोकना, यत् = यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)।

सम्भूत्याम् = सम्भूति में, सम्यक् होने में (सम् - सम्यक्, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)।

सम्वत्सरम् = सम्वत्सर (सम् - एक समान रहना, न घबराना, सृ - चलना, सरकना)।

सर्तवे = बहने के लिए (सृ - जाना, सरकना, चलना, जानना, पाना)

सर्वतोमुखः = सब ओर मुख वाला (सर्वतो - सब ओर, मुख् - मुख्य होना, जाना, खाना)।

सर्वम् = सब, सभी (सर्वनाम)।

सर्वहुतः = सर्वस्व दानी, सब को दान अथवा आह्वान करने वाले (सर्व - सब, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)।

सर्वा = सब (सर्वनाम)।

सर्वाः = सभी (सर्वनाम)।

सर्वाणि = सब, सभी (सर्वनाम)।

सर्वान् = सभी को (सर्वनाम)।

सर्वे = सब (सर्वनाम)

सवितः = सवित, ऐश्वर्य युक्त और उत्पन्न करने वाले (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

सविता = सृष्टिकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना या करना)।

सवितारम् = सविता, ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न करने वाले को (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना)।

सवितुः = उत्पन्न करने वाला, अद्भुत सामर्थ्यवान्, ऐश्वर्यवान् (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य होना)।

सह = साथ, सहित (सर्वनाम)।

सहस्त्रधारम् = हजारों धाराओं वाला (सहस्त्र = हजार, धृ-धाः- धारण

करना, धारा होना, धार बाँधना)।

सहस्रपात् = सहस्रों, हजारों पाद अर्थात् पैरों वाला (सहस्र - हजार, पद् - चलना, पत् - चलना, ऐश्वर्य होना)।

सहस्रवल्शा = हजार आच्छादनों युक्त (सहस्र - हजार, वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, जाना)।

सहस्रशीर्षा = सहस्रों, हजारों शिरों वाला (सहस्र - हजार, शीर्ष - शीर्ष होना, उच्च होना, मुख्य होना)।

सहस्रम् = सहस्र को, बहुतों को (सहस्र - हजार)।

सहस्राक्षः = सहस्रों, हजारों नेत्र वाला (सहस्र - हजार, अक्ष् - देखना, खेलना)।

संशाय = सम्यक् तीक्ष्ण करके (सम् - सम्यक्, भलीभांति, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना)।

सा = वह, उसने (सर्वनाम)।

साध्या = साध्यगण (साध् - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जीतना, साधना करना, यशस्वी होना)।

साध्याः = साध्य (साध् - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जीतना, साधना करना, यशस्वी होना)।

साम = साम, सामवेद के मंत्र (साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना)।

सामानि = साम (साम - सान्त्वना देना, शान्त करना, समाधान करना)।

साशनानशने = खाने वाले और न खाने वाले (स-अशन-अन्-अशन्, स - सहित, साथ, अश् - व्याप्त होना, पाना, पहुँचना, संग्रह करना। अश् - खाना, अन् - नहीं)।

सिन्धून् = सिन्धुओं को, सिद्धि को, पूर्णताओं को, अध्ययन को, सम्बन्धों को (सिध- सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सि-सिञ् - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

सिमाः = सम्पूर्ण (सर्वनाम)।

सीसा = बन्धनकारी (सि = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)।

सृकम् = सृक को, प्रगतिशील को (सृ - जाना, सरकना)।

सु = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग)।

सुक्रतुम् = अच्छा करने वाले को, सत्कर्म कर्ता को (कृ - करना)

सुतपेयाय = उत्पन्न हुए की रक्षा के लिए, पान के लिए (सु - उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, पा - रक्षा करना, पालन करना, पा-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)।

सुतसोमस्य = सुतसोम का, ऐश्वर्यवान् सोम का, उत्पन्न करने वाले का (सु - उत्तम, अच्छा, सु - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)।

सुन्वते = स्नान करता है, सवन करता है (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुन्वन्तम् = उत्पन्न करने वाले को (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)।

सुपथा = अच्छे मार्ग पर (सु - उत्तम, अच्छा, सुन्दर, पथ - चलना)।

सुप्तस्य = सोते हुए का (सुप्-स्वप् - सोना)।

सुप्वा = उत्तम पवित्र (सु = अच्छा, पू = पवित्र करना)।

सुमतिः = सुमति, सुबुद्धि (सु - उत्तम, अच्छा, मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)।

सुमित्रिया = अच्छे मित्र (सु - अच्छा, सुन्दर, मिद् -प्रीति करना, मृदुल होना)।

सुव = उत्पन्न कीजिये (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

सुविताय = सुवित के लिए, उत्तम, विशेष विस्तार, संरक्षण के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, वि - विशेष, ताय - संरक्षण करना, फैलाना)।

सुवीरासो = अच्छे वीर, सुवीर (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)

सुवृता = सुव्रती, उत्तम व्रत वाले (सु - अच्छा, उत्तम (उपसर्ग), वृत् - रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ - नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)।

सुशिप्रः = उत्तम क्षरण करने वाला (सु - अच्छा, उत्तम, शिप - क्षरण होना, काटने योग्य होना)।

सुषारथिः = उत्तम सारथी (सु - उत्तम, अच्छा।स - सहित, साथ।रम् - रमना, रमण करना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)।

सूचीभिः = सूचियों द्वारा, सूचनाओं द्वारा (सूच् - सूचना करना)।

सूनवे = सन्तान के लिए, पुत्र के लिए (सू = जन्म देना)।

सूपायनो = उत्तम उपाय, उत्तम निकट प्रगति, प्राप्ति (सु + उप + अयनः, सु - उत्तम, श्रेष्ठ, उप - समीप, अय् - चलना, जाना, ध्वनि करना)।

सूर = सूर्य, ऐश्वर्यवान्, सृजनकर्ता (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न होनाा)

सूर्यः = ऐश्वर्यशाली, प्रकाशवान्, सूर्य (सुर् - ऐश्वर्य, प्रकाश होना)।

सूर्यम् = सूर्य को (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्‌भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)।

सूर्याम् = सूर्या को, ऐश्वर्य को, सृजन को (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्‌भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)।

सूर्यो = सूर्य (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्‌भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)।

सो = वह, उसने (सर्वनाम)।

सोमपाः = सोम-पालक, सोमपान करने वाला (सु - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना।पा - रक्षा करना, पालन करना, पी-पिब् - पीना, पान करना)

सोमेन = सोम द्वारा, सौम्यता द्वारा, ऐश्वर्य-सृजन द्वारा (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।

सोमो = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्‌भुत सामर्थ्य होना, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सो - अन्त करना)

सोम्यस्य = सौम्य का (सु - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्‌भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू - प्रेरणा देना, सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)।

सौभगाय = सौभाग्य के लिए (सु = उत्तम भज् =सेवा करना, दान करना, सिद्ध करना)।

स्तनयित्नवे = गर्जन के लिए (स्तन - मेघ की गर्जना होना)।

स्तभितम् = स्थित हैं (स्तभ्-स्तभि-स्तम्भ - स्थापित करना, स्थित करना)।

स्तुता = स्तुति की हुई (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तुषे = स्तुति करते हैं (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)।

स्तेनः = चोर (स्तेन - चुराना, लूटना)।

स्तोतृभ्यः = स्तुतियों के लिए (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्तोमम् = स्तोम, स्तुति को (स्तोम - प्रशंसा करना, स्तुति करना)।

स्थिरैः = स्थिरों द्वारा (स्था - ठहरना, स्थिर होना)।

स्मर = स्मरण करो (स्मृ - स्मरण करना)।

स्मा = है (अस् - होना)।

स्यात = हो (अस् = होना)।

स्याम = हों (अस् - होना)। **स्याम** = हों (अस् - होना)।

स्योना = सुखकारी (स्योन् - सुख होना, सुख देना)।

स्त्रवन्तु = अभिसिञ्चन करें (स्त्रु - जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।

स्वः = ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न करने वाले, स्वः (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न होना)।

स्वदतु = रुचिकर हो, प्रसन्नता युक्त करे (स्वद् - स्वाद लेना, रुचिकर होना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना)।

स्वधितिः = स्वधिति (स्व - अपना, धि-धा - धारण, पोषण, रक्षण करना)।

स्वधिते = हे स्वधित (स्व = अपना, धा = धारण, पोषण, रक्षण करना)।

स्वयम्भूः = स्वयम् होने वाले (स्वयम् - अपने आप, भू - होना)।

स्वस्तये = कल्याण के लिए (सु - अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण)।

स्वस्ति = कल्याण (अव्यय)।

स्वे = अपने लिए, अपने में (सर्वनाम)।

ह

ह = ही, निश्चय ही (अव्यय)।

हत्वा = हनन कर (हन्- मारना)।

हन्ता = मारने वाला (हन् - मारना)।

हरसे = हर के लिए (हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हरिणीः = हरिण युक्त, हरण करने वाले (हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हवन्ते = आह्वान करते हैं, आदान - प्रदान करते हैं (हू - दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हव्यदातये = हव्यदाता के लिए (हू - दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, दा - दान करना, देना)।

हवामहे = आह्वान करते हैं (ह्वे - बुलाना, आह्वान करना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)।

हविः = हवि (हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)।

हविषा = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू - दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हवेते = बुलाते हैं, दान, आदान-प्रदान, तृप्ति करते हैं (हू - दान करना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।

हव्यम् = हव्य, देय, दान को (हु - आदान-प्रदान करना)।

हि = ही (अव्यय)।

हितः = हित, गति, वृद्धि (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)।

हिमवन्तो = हिमवान्, गतिवान्, गति-वृद्धि युक्त, शीतल (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, शीत होना)।

हिरण्मयेन = दीप्तिमान, चमकीले (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, चमकना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिरण्यगर्भ = हिरण्यगर्भ (हिरण् - प्रकाश करना, शब्द करना, ग्रह-गृह-गृभ्-गर्भ् - भीतर होना, अन्तःवास करना)।

हिरण्यगर्भः = प्रकाश, शब्द को गर्भ में रखने वाला (हिरण - प्रकाश करना, शब्द करना, गृह् - गृभ् - ग्रहण करना, भीतर रखना)।

हिरण्ययेन = हिरण्य द्वारा, प्रकाशमान, शब्दकर्ता द्वारा (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)।

हिंसीः = हिंसा करो (हिंस् = हिंसा करना, मारना)।

हिंसीत् = हिंसा करे (हिंस् - हिंसा करना, मारना)।

हृत् = हृदय (हृ - ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना)।

हृदयस्य = हृदय का (हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हृदयानि = हृदय (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)।

हुवेम = आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे - शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

हेतयः = हेतियाँ, गतियाँ, प्रेरणाएँ (हि - जाना, प्रेरणा करना जानना, पाना)।

होता = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

होतारम् = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले को (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे - शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

ह्वयताम् = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे - शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)।

ह्वाः = वक्र हो, कुटिल हो (ह्वृ = वक्र होना)।

ह्वार्षीत् = वक्र हो (ह्वृ = वक्र होना)॥

ॐ

स्वामी शरण कृत साहित्य

मो. 9839105629, 8687849004

1. ऋग्वेद भाष्य :- ऋग्वेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण।

(बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

2. सामवेद भाष्य :- सामवेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द

अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

3. अथर्ववेद भाष्य :- अथर्ववेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

4. यजुर्वेद भाष्य :- यजुर्वेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

5. वेदायन भाष्य :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

6. वेदायन प्रवचन :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। इसके साथ ही इन मन्त्रों पर विस्तृत प्रवचन भी इस पुस्तक में संकलित हैं। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है। सभी के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

7. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद, भावार्थ सहित):- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। **रु. 100.00**

8. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद) :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। वेदपाठ तथा उपासना के लिए। **रु. 100.00**

9. यजुर्वेद एकादशी:- यजुर्वेद के अन्तिम 11 अध्यायों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

10. चतुर्वेद सरल पाठ :- प्रथम बार प्रस्तुत सन्धियों से मुक्त चारों वेदों का सरल पाठ जन साधारण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। (बृहद् आकार) **रु. 2500.00**

11. ऋग्वेद सरल पाठ :- ऋग्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। (बृहद आकार) **रु. 900.00**

12. सामवेद सरल पाठ :- सामवेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। **रु. 500.00**

13. अथर्ववेद सरल पाठ :- अथर्ववेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।

(बृहद आकार) **रु. 700.00**

14. यजुर्वेद सरल पाठ :- यजुर्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। **रु. 700.00**

15. वैदिक धात्वादि कोश :- पाणिनि तथा काशकृत्स्न प्रोक्त धातुपाठों को समाहित कर सम्पूर्ण धातुकोश तैयार किया गया है। उपसर्ग, अव्यय, संख्या, सर्वनाम शब्द भी दिये गये हैं। इसकी सहायता से वेद सहित सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का अर्थ किया जा सकता है। अत्यन्त उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

16. वैदिक शब्दकोश :- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश। (वृहद आकार) **रु. 900.00**

17. वैदिक शब्दकोश (लघु संस्करण) :- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश। **रु. 200.00**

18. सरल संस्कृत व्याकरण :- व्याकरण के मूल तत्वों पर आधारित इस पद्धति से शब्द रूप, धातु रूप, पाणिनीय सूत्र रटे बिना एक मास में संस्कृत पढ़ना, लिखना, बोलना सीख सकते हैं। दशकों के अनुभव के बाद प्रस्तुत उपयोगी चमत्कारिक व्याकरण प्रणाली। **रु. 95.00**

19. वैदिक इतिहास :- ब्रह्मा व मनु से आरम्भ कर बुद्ध तक का सम्पूर्ण क्रमबद्ध इतिहास एक पुस्तक में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया है। सूर्यवंश की 128 पीढ़ियों का इतिहास प्रथम बार प्रस्तुत किया है। सूर्यवंश, चन्द्रवंश की शाखाओं सहित मनु से भोज तक सम्पूर्ण वंशावली भी दी गयी है। **रु. 200.00**

20. ओम् साधना :- ओम् साधना, वैदिक आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना एवम् योग चिकित्सा। **रु. 200.00**

21. युगबोध :- प्रबन्ध काव्य। **रु. 300.00**

22. चिन्तन प्रवाह :- वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन सम्बन्धी चिन्तन। **रु. 500.00**

❖❖ ❖ ❖❖

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ओम् खम् ब्रह्म॥

आगामी प्रकाशन योजना

1. वैदिक व्याकरण : पंचपाठी व्याकरण का समयानुकूल प्रस्तुतीकरण। अष्टाध्यायी सूत्रों का अनुवृत्ति सहित प्रस्तुतीकरण, जिससे प्रत्येक सूत्र स्वयम् ही सम्पूर्ण अर्थ स्पष्ट कर सके। व्यापक प्रभाव वाले सूत्रों को महत्व देते हुए, अपवादों को स्पष्ट करना तथा उनकी सीमाओं का स्पष्टीकरण करना। पंचपाठी की अन्य पुस्तकों का भी इसी भाँति सम्पादन तथा उणादि कोष आदि का अकारादि क्रम से प्रस्तुतीकरण।

2. वैदिक महापुराण : पुराण विद्या का व्यापक शोधपरक अध्ययन कर पंच-लक्षणों के आधार पर सम्पादन।

3. वैदिक जीवन : वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन के साथ ही वैदिक साहित्य का सम्पूर्ण परिचय।

❖❖ ❖ ❖❖

ॐ मन्त्र

(यजुर्वेद अन्तिम मन्त्र)

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः,

सो असौ अहम्, ओ3म् खम् ब्रह्म।।

ओ3म् खम् ब्रह्म।।

जो आदित्य पुरुष वही,

मैं भी हूँ, पहचान।।

ओम् ब्रह्म व्यापक परम।।

ओम् ब्रह्म व्यापक परम।।